हमारा टी सी आई एल

त्रैमासिक गृह पत्रिका-संयुक्तांकः 74-75

2016

टी. सी. आई. एल.

टीसीआईएल परिवार के नाम कुछ शब्द

प्रिय साथियों,

आज दिनांक 1/2/2016 को संचार मंत्रालय, भारत सरकार के आदेशानुसार मुझे टीसीआईएल के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक का अतिरिक्त कार्यभार संभालने का गौरव प्राप्त हुआ है। यह मेरे लिए अपार हर्ष और गौरव का विषय है और मैं यह आशा करता हूं कि पहले की भांति आगे भी आप सभी से मुझे सहयोग मिलता रहेगा जिसके बल पर मैं इस महत्वपूर्ण दायित्व का भली-भांति निर्वाह का सकूंगा।

इस अवसर पर मैं टीसीआईएल परिवार के सभी सदस्यों का आह्वान करता हूं कि आइए, हम सभी मिलकर यह बीड़ा उठाएं कि हम सभी लोग जो भी, जिस पद पर हैं और जिन जिम्मेदारियों का निर्वाह कर रहे हैं, उन्हे पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ करेंगे ताकि हमारी सभी परियोजनाएं निर्धारित समय, निर्धारित लागत के भीतर निष्पादित होंगी और आने वाले वर्षों में हमारा टीसीआईएल सफलता की नई ऊंचाइयों को छुएगा। हम सभी सत्यनिष्ठा के नए आयाम स्थापित करें और बेहतर कार्य करने के लिए एक-दूसरे को प्रेरित करते रहें, इसी से टीसीआईएल तथा टीसीआईएल परिवार के सदस्यों का गौरव बढ़ेगा।

सस्नेह,
अजय गुप्ता

आपके विचार

'हमारा टीसीआईएल' पत्रिका के इस अंक में भी विविध रचनाओं का समावेश किया गया है। डॉ कलाम पर विशेष अंक प्रकाशित कर आपने सचमुच बहुत सराहनीय कार्य किया है। पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न विषयों पर लेख, कहानियाँ, कविताएँ, ज्ञानवर्धक तथा रुचिपूर्ण है।

अमित प्रकाश
उप निदेशक (राजभाषा)
दूरसंचार विभाग, नई दिल्ली

'हमारा टीसीआईएल' पत्रिका बहुत ही ज्ञानवर्धक है तथा हिंदी को बढ़ावा देने के हमारे प्रयासों में सहायक है। डॉ कलाम पर विशेष अंक बहुत शानदार है। सभी लेख अत्यन्त रोचक व ज्ञानवर्धक हैं।

मोहन मुरारी
राजभाषा प्रभारी
इंडियन एयर फोर्स, नई दिल्ली

'हमारा टीसीआईएल' पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कहानी, कविता आदि ज्ञानवर्धक एंव रुचिकर हैं। डॉ कलाम पर विशेष अंक प्रकाशित कर आपने अत्यंत प्रेरणा दायक काम किया है। इसके लिए आपको साधुवाद है।

हीरा वल्लभ शर्मा
वरि. प्रबंधक (सेल)

हमारा टी सी आई एल

मई, 2016 (गृह पत्रिका) अंक: 74-75

अनुक्रमणिका

अध्यक्ष एंव प्रबंध निदेशक का संदेश	2
संपादकीय	3
साक्षात्कार	4-9
संघ का राजकीय कार्य हिन्दी में करने के लिए वार्षिक कार्यक्रम गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग	10-14
स्मार्ट शहरों से पहले जरूरी है छोटे शहरों का विकास	15-16
टीसीआईएल की सफलता गाथाएं	17-19
होली पर्व सम्मेलन	20-21
राजभाषा : महत्वपूर्ण जानकारी	22
कार्यालयी कार्य में पारदर्शिता और विश्वास	23
कार्य करने की प्रेरणा	24-25
प्रकृति एवं मनुष्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है	26-29
अभिप्रेरण	30-34
सफलता का राज	35-37
टीसीआईएल कर्मचारी संघ की अवकाश यात्रा	38
श्री वखलू का टीसीआईएल परिवार के लिए शुभकामना संदेश	39
सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित स्थायी समिति का टीसीआईएल दौरा	40

संरक्षक:
अजय गुप्ता
अध्यक्ष एंव प्रबंध निदेशक

सलाहकार:
राजेश कपूर
निदेशक (तकनीकी)

राजीव गुप्ता
निदेशक (परियोजनाएं)

संपादक मंडल:
महेंद्र कुमार यादव
समूह महाप्रबंधक (मा.सं.वि.)

शिवालिनी सिन्हा
समूह महाप्रबंधक (तकनीकी)

जी. के. नन्दा
महाप्रबंधक (कारोबार विकास)

संपादक:
कपिल शर्मा
हिन्दी अधिकारी (राजभाषा)

सहयोग:
जसविंदर कौर, वरि. अनुवादक
रेणु मणि, पर्यवेक्षक

संपर्क सूत्र:
हिन्दी अधिकारी (राजभाषा)
टी सी आई एल भवन, दूसरा तल,
ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली-110 048
दूरभाष: 011-26202215
फैक्स: 011-26242266
ई-मेल: kapil.sharma@tcil-india.com
वेबसाइट: www.tcil- india.com

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों को अपने हैं, टीसीआईएल प्रबंधन का इनसे सहमत होना जरूरी नहीं।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश

''हमारा टीसीआईएल'' गृह पत्रिका के सभी पाठकों को मेरा नमस्कार। इस पत्रिका को लेकर पहली बार अपने विचार लिखते हुए मैं अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूं। और इस बात से मुझे और भी अधिक प्रसन्नता है इस बार पत्रिका की मुख्य विषयवस्तु 'कार्यालय में कार्य करने की प्रेरणा' रखी गई है जोकि हमारे हृदय के बहुत नजदीक है। मित्रों, मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता है कि आज के बदलते परिवेश में मीडिया केवल समाचारों का संप्रेषण ही नहीं करता बल्कि अपने उत्पादों की ब्रांडिंग, अपने क्रियाकलापों की सही जानकारी और अपने उपलब्धियों के सहज वर्णन का एक ऐसा माध्यम बन गया है जो हर क्षेत्र के लिए अनिवार्य है। भारत सरकार ने पिछले कुछ समय में कई बेहतरीन और महत्वाकांक्षी योजनाओं का शुभारंभ किया। केंद्र सरकार का एक अंश होने के नाते यह हमारा दायित्व है कि हम अपने-अपने सूचना स्त्रोतों के माध्यम से इन योजनाओं और इनके महत्व से अपने पाठकों को अवगत कराएं। भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं, जैसे कि - मेक इन इंडिया, स्वच्छ भारत, डिजिटल इंडिया आदि के संबंध में टीसीआईएल द्वारा किए जा रहे समस्त क्रियाकलापों का विस्तृत वर्णन हमारी वेबसाइट www.tcil-india.com पर उपलब्ध है तथा इससे संबंधित टीसीआईएल की गतिविधियों का ब्यौरा इस पत्रिका के पिछले संस्करण में प्रस्तुत किया गया था। 'हमारा टीसीआईएल' का यह संस्करण सूचना कार्यालय, भारत सरकार के दिशानिर्देशों का अनुसरण करते हुए अपने पाठकों को भारत सरकार की योजनाओं के संबंध में टीसीआईएल की गतिविधियों का एक लेखा-जोखा प्रस्तुत कर रहा है।

मित्रों एक भाषा के रुप में हिंदी कितनी महान है, इसे शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता है। टीसीआईएल में मैंने और मेरे साथियों ने हमेशा से ही यह प्रयास किया है कि हिंदी भाषा को टीसीआईएल के प्रत्येक कार्यकलाप में शामिल किया जाए, अपने कर्मियों को तकनीकी प्रशिक्षण भी हिंदी भाषा में दिया जाए और उन्हें अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाए। इस गृह पत्रिका के माध्यम से हमने अपने क्रियाकलापों संबंधी जानकारी सरल, सहज हिंदी भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। मुझे पूरी आशा है कि पाठकों को इस गृह पत्रिका का यह स्वरूप बहुत पसंद आएगा।

-अजय गुप्ता

संपादकीय

दोस्तों, कुछ समय पहले टीसीआईएल की गृह पत्रिका के संपादक मंडल द्वारा यह निर्णय लिया गया कि इस बार की पत्रिका की मुख्य विषयवस्तु 'कार्यालय में कार्य करने की प्रेरणा' रखी जाए। इस संबंध में टीसीआईएल के विभिन्न कर्मचारियों के विचारों को आलेख के रूप में प्रकाशित करते हुए मैं अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूं। पर यहां कुछ बातें मैं अवश्य कहना चाहूंगा कि विचार रखना एक बात है और उन विचारों का कार्यान्वयन दूसरी। अच्छे विचार संप्रेषित करने के साथ- साथ कार्यान्वयित किए जाने भी आवश्यक हैं। इसीलिए मैं टीसीआईएल के सभी साथियों विशेषकर उच्चाधिकरियों से यह आशा करता हूं कि अपने व्यवहार और अपने कार्य के ऐसे आदर्श स्थापित करें जो टीसीआईएल के इतिहास में हमेशा के लिए दर्ज हो जाएं।

हमारे एक अधिकारी हैं जिन्हें नसीहत देने की बहुत बुरी आदत है। जी हां, इसे बुरी आदत ही कहूंगा क्योंकि आदत चाहे ज्यादा खाने की हो या ज्यादा बोलने की, वो बुरी ही होती है। एक दिन मैंने देखा कि इन साहब के कमरे में एक महिला अधिकारी कोई प्रेजेंटेशन बना कर लाई थी तो साहब उस समझाने लगे कि आपका प्रेजेंटेशन बहुत लंबा और बोरिंग है, इतना पढ़ने के लिए किसी के पास समय नहीं है। अपनी बात को संक्षिप्त और कम से कम शब्दों में रखना चाहिए। इसे छोटा करें। साहब ने बात तो बहुत सही की पर यह कहने के लिए उन्होंने खुद 20 से 25 मिनट लिए। तो जो नसीहत हम दूसरों को दे रहे हैं, यदि हम उसका पालन स्वयं नहीं कर रहे हैं तो बेहतर यही है कि हम ऐसा न ही करें। वैसे भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारे काम, हमारी आदतों, हमारे व्यवहार पर सभी की नज़र होती है, खासकर, जूनियर साथियों की। वो हमारे भीतर एक आदर्श व्यक्तित्व खोजते हैं और यदि हम ही बेवकूफियां करेंगे तो फिर हमें अपने कनिष्ठ साथियों से उम्मीद रखने का कोई अधिकार नहीं हैं।

फिर भी इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता है कि टीसीआईएल प्रबंधन के सभी अधिकारी अत्यंत सरल और मृदुभाषी स्वाभाव के हैं और उनके साथ-साथ बिताए गए कुछ पल भी अपने आप में अत्यंत प्रेरणादायी होते हैं। मैं आशा करता हूं कि इस संस्करण में कार्य की प्रेरणा पर जो आलेख प्रकाशित किए हैं, उससे पत्रिका के सभी पाठक लाभांवित होंगे।

- कपिल शर्मा

टीसीआईएल को अपनी विश्वस्तरीय पहचान को भुनाने का कोई अवसर नहीं छोड़ना चाहिए : विमल वखलू

टीसीआईएल के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री विमल वखलू ने दिनांक 31 जनवरी 2016 को सेवानिवृत्ति प्राप्त की। अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने अपने कुशल नेतृत्व और मार्गदर्शन के बल पर टीसीआईएल की उपलब्धियों को नए आयाम दिए। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि स्वाभाव से सरल और मृदुभाषी श्री वखलू टीसीआईएल के सबसे अधिक लोकप्रिय अधिकारियों में से एक हैं। टीसीआईएल की गृह पत्रिका 'हमारा टीसीआईएल' के संपादन मंडल को कुछ दिन पहले श्री वखलू से साक्षात्कार करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर श्री वखलू ने अपने कार्यकाल के सबसे यादगार पलों, अनुभवों और स्मृतियों को साझा किया। संपादन मंडल में से श्रीमती शिवालिनी सिन्हा, श्रीमती विनीता आनंद और श्री कपिल शर्मा ने उनका साक्षात्कार लिया। इस साक्षात्कार के अंश यहां प्रस्तुत हैं।

प्रश्न न. 1- सर, आपकी लीडरशिप, आपके कार्यकाल में टीसीआईएल को कई बड़ी परियोजनाएं प्राप्त हुई है। क्या आप हमारे साथ अपनी लीडरशिप की सफलता के अनुभव साझा करना चाहेंगे?

श्री वखलू- यहां दो महत्वपूर्ण बातों का उल्लेख मैं करना चाहूंगा। पहली बात तो यह है कि जितने भी बड़े टेंडर्स थे, उनमें हमने भाग लिया और ऐसी परिस्थितियों में भाग लिया जहां कई लोग चाहते थे कि हम ऐसा न करें। उदाहरण के लिए नेवी परियोजना के टेंडर में भाग लेना। पर हमने इसमें भाग लिया और 550 करोड़ रु. का प्रोजेक्ट हमें प्राप्त हुआ। दूसरी तरफ, डिफेंस परियोजना के टेंडर में भी भाग लेने से पहले हमने अपनी रणनीति पर गहनता से काम किया और हमारे अधिकारियों व कर्मचारियों की मेहनत के बल पर हमें 2000 करोड़ रु. की परियोजना प्राप्त हुई। बड़ी परियोजनाओं के टेंडर में भाग लेने को लेकर हमारी सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि हमारे पास पर्याप्त पूंजी नहीं थी। इसी के चलते डाक परियोजना के टेंडर में भाग लेने में हमें कठिनाई हुई। फिर हमने एक पार्टी के साथ गठबन्धन किया जिनके पास निवेश के लिए पूंजी है और उनके साथ मिलकर हमने इसमें भाग लिया। इस प्रकार डाक परियोजना का रूरल आईसीटी (ग्रामीण सूचना एवं संचार तकनीक) प्रोजेक्ट जिसकी कुल लागत 1350 करोड़ की है, हमें मिला। इसके आलावा जैसा कि सभी को मालूम है कि पैन-अफ्रीकी परियोजना है। वर्ष 2006 से इस पर काम चल रहा है। 2008 से इसका कार्यान्वयन आरंभ हुआ। इस परियोजना को बहुत अच्छी सफलता मिली जिसके चलते इसे आगे पांच और वर्षों के लिए विस्तार मिला जिसका मूल्य 950 करोड़ रु. है। यह विस्तार हमें केवल इसलिए ही मिला क्योंकि हमने उसका समयबद्ध और पूरी कुशलता के साथ कार्यान्वयन किया। इस परियोजना से जुड़े देशों ने हमारे काम पर बहुत अच्छा फीडबैक दिया। प्रारंभ में हमारा लक्ष्य इसके माध्यम से 10000 विद्यार्थियों तक पहुंचना था पर हमारे कार्यकौशल के बदले हम 17,500 विद्यार्थियों तक पहुंचे और उन्हें स्नातक व स्नातकोत्तर डिग्रियां प्रदान कीं। इसके अलावा कुछ और परियोजनाएं मिलने की

हमें उम्मीद थी पर कुछ कारणों से ऐसा नहीं हो पाया। फिर भी हमने प्रयास किया कि अधिक से अधिक टेंडर प्रक्रियाओं में भाग लें।

प्रश्न न. 2- अपने कार्यकाल के दौरान आपने सिस्टम को और बेहतर बनाने के लिए क्या कदम उठाए? क्या आप इस पर प्रकाश डालेंगे?

श्री वखलू - देखिए, टीसीआईएल एक परियोजना आधारित संगठन है और हमारा पूरा ध्यान सभी परियोजनाओं को तय समयसीमा और लागत के भीतर पूरा करने और इसकी गुणवत्ता बनाए रखने पर केंद्रित होना चाहिए। मेरे विचार में ऐसा तभी हो सकता है जब हम सभी परियोजना प्रबंधन तंत्र (प्रोजेक्ट मैनेजमेंट सिस्टम) को अच्छी तरह से समझे। इसलिए हम चाहते थे कि टीसीआईएल के इंजीनियर और वित्त विभाग से जुड़े सभी अधिकारी परियोजना प्रबंधन संस्थान की परीक्षा पास करें और प्रमाणपत्र प्राप्त करें। परियोजना प्रबंधन की योग्यता आपको अपनी परियोजनाओं को समयबद्ध पूरा करने और उसके लिए पर्याप्त रणनीति बनाने में समक्ष बनाती है। इसी के चलते हमने अपने कर्मचारियों को परियोजना प्रबंधन प्रमाणपत्र (पीएमपी) के लिए प्रेरित किया। मैंने स्वयं इस संस्थान से प्रमाणपत्र प्राप्त किया। कई अधिकारी इसके लिए अवकाश मांग रहे थे तो मैंने उन्हे यही सुझाव दिया कि इसे अपने काम के साथ-साथ करना होगा। टीसीआईएल के कई युवा अधिकारियों जैसे कि सत्यनारायण और विशेषकर महिला अधिकारियों जैसे कि आरती शेनमार, रीना गुप्ता, चंचल पठक, अमरजीत कौर आदि ने यह प्रमाणपत्र प्राप्त किया। इसलिए मुझे लगता है कि टीसीआईएल में सभी को यह प्रयास करना चाहिए ताकि काम के प्रति हमारा नजरिया और ज्यादा व्यावसायिक बने। ऐसी कई जगहें है। जैसे कि कुवैत, जहां आप टेंडर में बिड करते हैं तो वे पूछते हैं कि आपके पास कितने पीएमपी हैं और यदि हमारे पास यह पर्याप्त मात्रा में न हों तो वे हमें अपात्र घोषित कर देंगे। समय आ गया है कि पीएमपी को अनिवार्य कर दिया जाए। इसके अलावा एक बात और कहना चाहूंगा कि यहां एक प्रवृत्ति बन गई थी कि सभी मुख्यालय में ही रहें और किसी को बाहर न जाना पड़े। इसलिए मैंने यह प्रयास किया कि टीसीआईएल में नए शमिल होने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों को सबसे पहले विदेश परियोजनाओं में भेजा जाए ताकि उन्हें युवा आयु में ही 'वर्क कल्चर', परियोजना सबन्धी परिस्थितियों आदि का 'एक्सपोज़र' मिले। कई युवा हैं, वो बाहर इतने खुश हैं कि वही रहना चाहते हैं जैसे कि सुहैल अहमद जो सऊदी अरब में मोबिली कंपनी की एफटीटीएच जैसी इतनी बड़ी परियोजना का कुशलतापूर्वक प्रबंधन कर रहा है। यदि सुहैल जैसे युवाओं को मुख्यालय में ही रखा होता तो वे महज एक क्लर्क बनकर ही रह जाते।

प्रश्न न. 3- सर, क्या आप पीएमपी प्रमाणपत्र प्राप्त करना टीसीआईएल में प्रबंधक व इससे ऊपर के स्तर के अधिकारियों के लिए अनिवार्य करना चाहेंगे?

श्री वखलू - देखिए, यह अप्रत्यक्ष रुप से लगभग अनिवार्य ही हो चुका है क्योंकि हमने इसे पदोन्नति के साथ लिंक कर दिया है। यदि आपको पदोन्नति चाहिए तो आपको यह या फिर प्रबंधन की कोई और परीक्षा पास करनी होगी। हम लोगों को जबरन यही से (पीएमआई) ही प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए विवश नहीं करेंगे क्योंकि इससे यह भी लग सकता है कि इस संस्थान के प्रति मेरा या प्रबंधन का कोई निहित स्वार्थ है। ऐसा नहीं है। हमारा यही मकसद है कि कर्मचारी प्रबंधन कुशल बनें और वे किसी भी प्रमुख संस्थान से इस सबन्ध में प्रमाणपत्र प्राप्त करें। वैसे आपको यह भी बताना चाहूंगा कि केवल 'पीएमआई' ही अंतरराष्ट्रीय मानदंडों पर खरा उतरा है।

इसके अलावा टेंडरों के मामले में भी एक प्रवृत्ति यहां रही है कि कोई भी टेंडर हो, उसके लिए चिर-परिचित वेंडर को काम दे दो और उसी से ही काम लेते रहो। मैं इससे इत्तफाक नहीं रखता। मेरे विचार में हमें परियोजनाओं में मूल्य-वर्धन करना चाहिए और कोशिश यही रहनी चाहिए कि हम दूसरों पर निर्भर न रहें। पैन-अफ्रीकी परियोजना में जब सेटेलाइट स्थापना का भी काम आया तो कई लोगों ने कहा कि इसे कहीं और से करवा लेना

चाहिए। पर मैंने कहीं इसका विरोध किया और कहा कि यह काम भी हमारे लोग ही करेंगे। काफी वाद-विवाद हुआ और अंततः हमने इस कार्य को स्वयं ही किया। इसका सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि इस काम के लिए कॉन्ट्रेक्ट पर जो लोग हमने नियुक्त किए थे, उन्हें कार्य का बहुत अच्छा अनुभव हुआ जिसके चलते बाद में उन्हें कई अच्छी नौकरियों के प्रस्ताव आए। साथ ही हमने इस बात पर ध्यान दिया कि अनुबंध आधार पर काम कर रहे इन लोगों को टीसीआईएल में ही नियमित किया जाए क्योंकि ये प्रतिभाएं आगे चलकर कंपनी के बहुत काम आ सकती हैं।

प्रश्न नं. 3- कार्यपालक निदेशक, फिर निदेशक और फिर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक। अपनी इस यात्रा को आप किस दृष्टिकोण से देखते हैं? हम सभी लोग यह जानना चाहेंगे कि इन पदों पर रहते हुए आपको किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

श्री वखलू - टीसीआईएल में मैं सबसे पहले कार्यपालक निदेशक के पद पर आया। और मेरे विचार में टीसीआईएल में आना ही मेरे लिए सबसे बड़ी चुनौती थी। इससे पहले मैं दूरसंचार विभाग (डीओटी) में महाप्रबंधक के पद पर तैनात था। मैं वहां त्यागपत्र देकर टीसीआईएल में आया। उस समय टीसीआईएल की वित्तीय स्थिति अच्छी नहीं थी। टर्नओवर कुछ 400 करोड़ के आसपास था और टीसीआईएल में अधिकतर सिविल कार्य ही हो रहे थे। मेरे यहां आने का एक ही कारण था, पैन-अफ्रीकी परियोजना। यहां सेटेलाइट विशेषज्ञ की आवश्यकता थी और जब मैंने इस परियोजना के बारे में विस्तार से जाना कि यह शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण विषयों से सम्बन्धित है तो मुझे लगा कि मुझे इसमें भाग लेना ही चाहिए। इसलिए मैं यहां आया। मुझे कई लोगों ने समझाया कि आप टीसीआईएल में मत जाइए क्योंकि वहां डीओटी के मुकाबले वेतन कम है और आपको जो सुविधाएं (गाड़ी, बिजनेस क्लास का सफर आदि) आपको यहां मिली है, वह टीसीआईएल में नहीं मिलेंगी। पर मैं यहां आने का फैसला कर चुका था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं टीसीआईएल मैं निदेशक बनूंगा, सीएमडी बनूंगा। मेरा एक ही ध्येय था, पैन-अफ्रीकी परियोजना में तल्लीनता से काम करना। यहां काम शुरु किया तो कई चुनौतियां सामने आई। सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि कोई बाहर जाने के लिए राजी ही नहीं था। मुझे लगा कहीं यह काम शुरु होने से पहले ही असफल न हो जाए। लोगों की तैनाती के आदेश निकले पर लोगों ने जाने में आनाकानी की। कोई माता-पिता की बीमारी तो कोई अपनी बीमारी का कारण बताकर अपने पैर खींचने लगा। कुछ समय बाद तो मैं इतना तंग आ गया था कि वापिस जाने के बारे में सोचने लगा। एक रात मैंने आर या पार करने का फैसला किया। अगली सुबह मैं उपाध्याय जी (श्री राकेश उपाध्याय, तत्कालीन सीएमडी) के पास गया और उनसे कहा कि साहब अब हमारे पास बाहर से (अनुबन्ध आधार पर) आदमी लेने के अलावा और कोई चारा नहीं है। फिर हमने कॉन्ट्रेक्ट पर नियुक्तियां की और पीएमपी के सिद्धांतों के आधार पर कुछ नियम बनाए और उनका सख्ती से अनुपालन सुनिश्चित किया। कई चुनौतियां और भी आई जैसे कि सेनेगल में कस्टम क्लीयरेंस की। सेनेगल में 'कस्टम ऑक्शन' जैसी एक प्रक्रिया होती है। एक निजी कंपनी कस्टम को खरीद लेती है, सरकार को एक निर्धारित रकम का भुगतान करती है और बाद में वहां आने वाले आयात से कस्टम राशि प्राप्त करती है। हमें कस्टम में छूट थी इसलिए वहां की सरकार को इस कस्टम वाली कंपनी को हमारे समान पर सामान्यतया लगने वाली राशि देनी थी। सरकार के पास उस समय उतनी राशि नहीं थी। हमें बताया गया कि जल्द ही हम पैसा कंपनी को दे देंगे। हम उन्हें समझाने का प्रयास करते रहे पर इस प्रक्रिया में बहुत समय लग रहा था। जबकि परियोजना को हमने हर हाल में तय समयसीमा में पूरा करना था। यदि हम इस देश में कार्य पूरा नहीं कर पाते तो किसी भी देश में इस परियोजना का कार्यान्वयन नहीं हो सकता था, क्योंकि सेनेगल में ही 'सेटेलाइट हब' था। आखिरकार मैंने यह प्रस्ताव रखा कि उस कंपनी को अभी हम भुगतान कर देते हैं और बाद में सरकार से पैसा आने के बाद

उनसे रिफंड ले लेंगे। हमने यह भुगतान कर दिया और परियोजना को सही समय पर पूरा कर लिया। वो रिफंड तो हमें नहीं मिला पर परियोजना सही समय पर पूरा करने का लाभ जरूर मिला। इस अनुभव के बल पर हमने इसे बाकी स्थानों पर भी तय समयसीमा में पूरा किया। सरल शब्दों में कहूं तो यदि हम उस कस्टम राशि के भुगतान को बचाने पर ही समय लगा देते तो यह परियोजना पूरी न कर पाते जिसका नुकसान आगे चलकर एक बड़े स्तर पर हो सकता था।

इसके अलावा सार्क परियोजना के कार्यान्वयन का अनुभव भी बहुत अच्छा रहा। उसी दौरान मैंने निदेशक (तकनीकी) पद के लिए आवेदन किया और सफलता मिली। उस दौरान भी हमें कुछ बड़ी परियोजनाएं प्राप्त हुई, और फिर ईश्वर की इच्छा से इस पद पर भी आने का सौभाग्य मिला। कुछ चुनौतियां प्रशासनिक स्तर पर भी आई। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो यह नहीं चाहते कि सभी कुछ सामान्य रूप से चले। केवल यह देखकर कि उनका महत्व कम हो रहा है, वे कुछ असामान्य कर रहे थे। पर यह स्वाभाविक है और ऐसी चुनौतियां हर संगठन में सामने आती हैं। पर ऐसे सिर्फ कुछ ही लोग हैं जबकि अधिकांश लोग यहां बहुत परिश्रमी हैं और उन्हीं के बल पर यह संगठन आज नई ऊंचाइयों को छू रहा है। इन लोगों में टीसीआईएल को इससे भी कहीं ऊपर ले जाने की क्षमता है। मुझे उम्मीद थी कि पिछले वर्ष कंपनी का टर्नओवर एक वर्ष में ही 1000 करोड़ से अधिक हो जाएगा। पर ऐसा हो नहीं पाया। पर इस वर्ष में कंपनी का टर्नओवर 1500 करोड़ रु. से अधिक रहेगा। और आगे चलकर यह 2000 करोड़ रु. तक भी पहुंच सकता है। क्योंकि नेवी, डाक का काफी कार्य करना अभी शेष है जो अगले वित्त वर्ष में ही हो पाएगा।

प्रश्न नं. 4- विभिन्न देशों की यात्रा के दौरान आपने दूसरे देशों में निश्चित रूप से कई अच्छी परम्पराएं और नीतियां देखी होगी। आपके विचार में ऐसी कौन सी नीति है जिसे आपने टीसीआईएल में लागू किया या फिर आपके विचार में ऐसी कौन सी नीति जो टीसीआईएल में 'प्रेक्टिस' में लाई जा सकती है?

श्री वखलू - जहां तक वर्क कल्चर की बात है तो मैं आपको बताना चाहूंगा कि वर्क कल्चर को लेकर मेरा सबसे पहला अनुभव 'एनएचपीसी' में हुआ। वहां काम बहुत रुचिकर था, इसलिए बहुत अच्छा अनुभव मिला। पर जब मैं 'ओसीएस' (ओवरसीज़ कम्यूनिकेशन्स सर्विस) में गया तो वहां मुझे एक अलग ही कल्चर देखने को मिला जिसकी तुलना विदेशों के कार्य स्वरूप से की जा सकती है। वहां मेरे जैसे आठ इंजिनियरों के पास सहायक के रूप में केवल एक ही मजदूर था। उस मज़दूर से जब बात की तो उसने कहा कि सर, मेरा शैड्यूल बहुत 'टाइट' है। मैं इतने समय तक इनका, इतने समय तक इनका, फिर इनका और फिर आपका काम करूंगा। मैं अपनी बारी आने तक उसका इंतज़ार करता था। और जब वो मेरे साथ लगता था तो भी किसी वज़न को उठाने में यह कह देता कि सर यह बहुत भारी है और आपको भी मेरे साथ यह उठाना होगा। वहां इस प्रकार का सहायक स्टाफ बहुत कम था। और इसका फायदा यह हुआ कि हम लगभग सभी प्रकार के कार्यों के लिए आत्मनिर्भर होने लगे। इसी संगठन की ओर से मुझे कश्मीर में काम करने का अवसर मिला। वहां हमें कुछ रूसी इंजिनियरों के साथ काम करने का अवसर मिला। ये सभी हम लोगों से कही अच्छे रैंक पर काम कर रहे थे और मुझसे आयु में भी लगभग दुगने थे। मैंने देखा कि उनके पास सहायक के तौर पर कोई मजदूर नहीं था और वो सारा काम खुद ही कर रहे थे, उपकरण उठाना, सामान ले जाना आदि। फिर एक बात मैंने और देखी कि जब हमने उन्हें कहा कि चलिए इतवार है, आपको कश्मीर घुमाते हैं तो वे बोले कि जब तक हमारा काम पूरा नहीं होगा, हमारे लिए घूमना हराम हैं एक बार काम खत्म कर लें, फिर घूमेंगे-फिरेंगे। यह मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण अनुभव था। मेरे काम करने की प्रवृत्ति बदलने लगी। हम लोग अब कई बड़े-बड़े फॉल्ट अपने स्तर पर 'रेक्टीफाई' कर लेते थे।

फिर वर्ष 1985 में मैं दूरसंचार विभाग में आया। तब तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी के निदेश थे कि हमें अपनी उपग्रहीय प्रणाली का हरसंभव उपयोग

करने का प्रयास चाहिए। इसी के चलते एक दिन मैंने अपने एक कनिष्ठ अधिकारी को स्पैक्ट्रम एनेलाइज़र (जो थोड़ा भारी है) से 'मेजरमेंट' लेने के लिए कहा। थोड़ी देर में मैं वापिस लौटा तो देखा कि उसने अभी तक काम नहीं किया था। जब उससे पूछा तो वो बोला कि सर, कोई मज़दूर नहीं मिला। मैंने उसे झट से कहा, अरे यार, मुझे बोलना था ना। मैंने तुरंत वो एनलाइज़र उठाया और मैजरमेंट शुरू कर दिया। यह देख वहां के लोगों के आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहा। धीरे-धीरे यह बात फैल गई और फिर वहां को लोगों में वर्क कल्चर को लेकर बदलाव आने लगा। हर छोटा-छोटा काम करने से आपको एक अनुभव यह भी मिलता है कि आपको हर काम का ज्ञान हो जाता है। फिर आपको कोई यह कहकर मूर्ख नहीं बना सकता कि सर, उस काम को करने में बहुत देर लगी क्योंकि वो बहुत मुश्किल था। कई बार कुछ मुश्किलों का भी सामना करना पड़ता है। एक बार की बात है जब मुंम्बई और चेन्नई के बीच की लाईन में एक बड़ा फॉल्ट आया और उसके कारण रायगढ़ जिले का शेष भारत से संचार हट गया। हम वहां काम करने पहुंचे। रायगढ़ में टेलीफोन एक्सचेंज में भीड़ इकट्ठी हो गई और वहां बैठे स्थानीय दूरसंचार अधिकारी से इसकी शिकायत करने लगे। उस अधिकारी ने अपनी जान छुड़ाने के लिए बताया कि सिस्टम पीछे से ही खराब है और सम्बन्धित पार्टी धीरे-धीरे काम कर रही है और हम कुछ नहीं कर सकते हैं। पर भीड़ कहां मानने वाली थी। भीड़ वहां पहुंच गई जहां फॉल्ट था और हम सभी लोग काम में लगे हुए थे। उन्होंने पता लग गया कि हम लोग पूरी रात इसे ठीक करने में लगे है। भीड़ वापिस टेलीफोन एक्सचेंज पहुंची और वहां बैठे अधिकारी को उन्होंने पीटा और कहा कि तुम्हे शर्म आनी चाहिए झूठ बोलते हुए। अरे, यह बोल देते कि हम लोग रात भर से इसे ठीक करने में लगे हैं तो हम कभी कुछ न कहते पर तुम लोग जो झूठे बहाने लगाते हो, इससे हमें गुस्सा आता है। बाद में उनमें से कुछ लोगों ने हमे चाय और खाना 'ऑफर' किया। उस दिन एक रात बात समझ आ गई कि चाहे एक व्यक्ति हो या पूरी जनता, मेहनत की कदर हर कोई करता है। और हमें कभी भी बहानेबाज़ी नहीं करनी चाहिए।

प्रश्न नं.- अपने कार्यकाल के दौरान कोई मज़ेदार या यादगार किस्सा जो आप हमसे साझा करना चाहें?

श्री वखलू - मेरे विचार में वर्ष 2012 में डॉ. अब्दुल कलाम ने टीसीआईएल का दौरा किया, वह मेरे लिए सबसे यादगार अनुभव था। आपको याद होगा कि इस दौरान उन्होंने विश्व भर में 300 करोड़ लोगों को समर्थ बनाने के विषय पर व्याख्यान दिया जिसमें लगभग 1800 लोग 48 देशों में उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि पैन-अफ्रीकी परियोजना डॉ. कलाम की ही स्वप्निल परियोजना थी।

इसके अलावा एक बात यह भी कहना चाहूंगा कि मुझसे पहले जो लोग टासीआईएल में प्रमुख पदों पर रहे है और जिन कठिनाइयों का सामना करते हुए उन्होंने टीसीआईएल को खड़ा किया है, मेरे पास उनकी प्रशंसा के लिए शब्द नहीं हैं। मैं सलाम करता हूं उन अधिकारियों को जिन्होंने महज 10 लाख रु. की पूंजी के साथ शुरुआत की। उनके पास न तो पर्याप्त पूंजी थी और न ही श्रमशक्ति। पर फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी, हर तरह की चुनौतियों का सामना किया और टीसीआईएल की देश-विदेश में पहचान बनाई। ये सभी अधिकारी जैसे कि श्री एम. पी. शुक्ला, श्री वाई. एल. अग्रवाल, श्री नारंग मेरे लिए प्रेरणा के स्त्रोत हैं और हमेशा रहेंगे। मुझे यह देख ब्रह्मा जी की इस ब्रह्मांड की रचना की कहानी याद आती है। उनके पास कुछ नहीं था सिवाए अपार समुद्र के। पर उन्होंने ब्रह्मांड की रचना की। इसी तरह इन पूर्व अधिकारियों के पास कुछ नहीं था लेकिन अपने कुशल नेतृत्व और कठिन प्रयासों के चलते उन्होंने टीसीआईएल की नींव रखी, और विश्व स्तर पर इसकी एक पहचान बनाई। हम सभी लोग इसी पहचान के बल पर ही आज दुनिया में काम कर रहे हैं। मुझे दुख के साथ यह बताना पड़ रहा है कि हमारी एक विदेशी परियोजना में हमने आशानुरूप काम नहीं किया है और वहां 'क्लायंट' हमसे संतुष्ट नहीं था। पर फिर भी टीसीआईएल का ही नाम है, इसकी साख है जिसके बल पर क्लायंट ने हमसे उम्मीद नहीं छोड़ी है

और हमसे मुंह नहीं मोड़ा है। तो वाकई यह हमारे पूर्व अधिकारियों की मेहनत है जिसने हमें पहचान दी। आज जब मेरे पास कोई कर्मचारी समस्या लेकर आता है कि सर टीसीआईएल के पास उतनी फाइनेंशियल बैंडविड्थ नहीं है, या उतना स्टाफ नहीं है तो मैं उन्हें एक बात ही कहता हूं कि जब भी उन्हें ऐसी कठिनाइयां दिखें वे उन लोगों को याद करें जिन्होंने टीसीआईएल को शुरु किया, इसे खड़ा किया। उन्हें समस्याओं का हल मिल जाएगा क्योंकि उन्होंने जिन समस्याओं का सामना किया उनके सामने तो हमारी समस्याएं कुछ भी नहीं है।

प्रश्न नं. 6- आपके कार्यकाल में कोई ऐसी घटना जिस पर आपको अफसोस हो।

श्री वखलू - वैसे, ऐसी तो कोई घटना नहीं जिस पर मुझे अफसोस हो पर हां एस्कॉन के टेंडर में भाग न ले पाने पर बहुत दुख हुआ था। मुझे लगता है कि यह काम हम कर सकते थे और यह हमें ही मिलना चाहिए था क्योंकि इस प्रकार की परियोजनाएं टीसीआईएल के लिए ही बनी हैं। इनके लिए हमारे पास पर्याप्त विशेषज्ञता है, अनुभव है और ऐसा प्रोजेक्ट जो लगभग 6000 करोड़ रु. का है, हम छोड़ नहीं सकते।

प्रश्न नं. 7- सर, आपने टीसीआईएल में रहकर हिन्दी को बहुत बढ़ावा दिया। आपसे प्रेरित होकर टीसीआईएल के कर्मचारियों ने हिन्दी में अधिक से अधिक काम किया। अहिन्दी भाषी क्षेत्र से होते हुए भी आपने हिन्दी को जो प्यार और सम्मान दिया है, उसकी कोई अन्य मिसाल नहीं दी जा सकती है। हिन्दी भाषा को लेकर टीसीआईएल को आप कोई संदेश देना चाहेंगे?

श्री वखलू - जी हां, बिल्कुल। बहुत शर्म आती है मुझे जब मैं देखता हूं कि लोग अपनी मातृभाषा से ज्यादा अंग्रेजी को महत्व देते हैं। यह अपने आप में गुलामी की मानसिकता है और ऐसी मानसिकता के साथ हम तरक्की नहीं कर सकते हैं। जैसा कि मैंने पहले बताया कि कश्मीर में जब हमें रूसी इंजिनियरों के साथ काम करने का अनुभव हुआ तो हमें आपस में बात करते देख उन्हें इस बात पर हैरानी होती थी कि हम इंग्लिश में क्यों बात करते हैं। वो हमारा परिहास करते थे और करना भी चाहिए था क्योंकि आज़ादी मिलने के इतने वर्षों बाद भी हम अंग्रेज़ियत की गुलामी से बाहर नहीं निकल पाए। हिन्दी बहुत प्यारी भाषा है और हिन्दी भाषा ही हम सभी लोगों को एकसूत्र में जोड़े रखने का काम सबसे अच्छा कर सकती है। अपनी भाषा में कही गई बात हम अच्छे से समझते हैं। इसलिए हमें कभी भी अपनी भाषा पर अंग्रेज़ी को हावी नहीं होने देना चाहिए। अंग्रेज़ी जरूर समझें, उसे ज़रूर अपनाएं पर यह ध्यान रखें कि वो हिन्दी या हमारी किसी भी मातृभाषा का स्थान न ले सके।

प्रश्न नं. 6- अतं में, टीसीआईएल कर्मचारियों को आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

श्री वखलू - मैं एक बार फिर यही कहना चाहूंगा कि टीसीआईएल ने विश्व स्तर पर अपनी जो पहचान बना ली है, उसे भुनाने का कोई अवसर हमें छोड़ना नहीं चाहिए। हमें टेंडर प्रक्रियाओं में निरंतर भाग लेते रहना चाहिए, अपनी क्षमता से आगे जाकर काम करने का प्रयास करना चाहिए और अपनी तकनीकी क्षमताओं को अपग्रेड करने के प्रयास जारी रखने चाहिए। जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि यदि हम हर छोटे-बड़े काम में दक्षता प्राप्त करने का प्रयास करेंगे तो हमें यह पता चल जाएगा कि कौन से काम को करने में वास्तव में कितना वक्त लगता है। अक्सर देखा गया है कि लोगों में वेंडर्स से दोस्ती करने की प्रवृत्ति होती है। फिर जब टेंडर आता है तो लोग उसी वेंडर को बोल देते हैं कि 'बिड' करिए। वो वेंडर अपने हिसाब से 'बिड' करता है। और आज के कड़े प्रतिस्पर्धात्मक दौर में हम सिर्फ इसलिए पिछड़ जाते हैं क्योंकि ऐसे कार्यों के लिए भी हम वेंडर पर निर्भर हो जाते हैं। बाद में यही वेंडर हमसे प्रतिस्पर्धा करने लगता है। पर यदि ये कार्य भी हम स्वयं करें तो परियोजना की लागत और समयसीमा को लेकर हम सही आकलन कर सकेंगे। फिर टेंडरिंग प्रक्रिया में और बेहतर प्रदर्शन करेंगे और टीसीआईएल को लगातार काम मिलता रहेगा और यकीन मानिए आने वाले समय में ऐसा ही होगा क्योंकि युवा अधिकारियों व कर्मचारियों के कार्य प्रदर्शन को देखते हुए मुझे टीसीआईएल का भविष्य बहुत उज्ज्वल दिखाई दे रहा है।

संघ का राजकीय कार्य हिन्दी में करने के लिए वार्षिक कार्यक्रम गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

वार्षिक कार्यक्रम 2016-17

प्राक्कथन

दिनांक 18 जनवरी 2014 को ससंद के दोनों सदनों द्वारा पारित राजभाषा संकल्प में यह व्यक्त किया गया है कि

'' यह सभा संकल्प करती है कि हिन्दी के प्रसार एवं विकास की गति बढ़ाने हेतु तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए उत्तरोत्तर इसके प्रयोग हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एंव व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा और किए जाने वाले उपायों एवं की जाने वाली प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद के दोनो सदनों के पटल पर रखी जाएगी....''

उक्त संकल्प के उपबंधों के अनुसार केन्द्र सरकार के कार्यालयों और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों / उपक्रमों द्वारा कार्यान्वयन के लिए राजभाषा हिंदी के प्रसार और प्रगामी प्रयोग के लिए वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया जाता है। इसके लिए हिंदी बोले जाने और लिखे जाने की प्रधानता के आधार पर जिन तीन क्षेत्रों के रूप में देश के राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को चिह्नित किया गया है, की भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखा जाता है। वर्ष 2016-17 का वार्षिक कार्यक्रम इस क्रम में जारी किया जा रहा है इन तीन क्षेत्रों, यथा, -क,ख,और ग, का विवरण इस प्रकार है: सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में प्रगति हुई है, किन्तु अब भी लक्ष्य प्राप्त नहीं किए जा सके। सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है किंतु अभी भी बहुत सा काम अंग्रजी में हो रहा है। लक्ष्य यह है कि सरकारी कामकाज में मूलत: हिंदी का प्रयोग हो। यही संविधान की मूल भावना के अनुरूप होगा। कहने की आवश्यकता नहीं कि जनता की भाषा में सरकारी कामकाज करने से विकास की गति तेज होगी और प्रशासन में पारदर्शिता आएगी।

वर्तमान युग में कोई भी भाषा वैज्ञानिक, सूचना प्रोद्योगिकी तथा तकनीकी विषयों से जुड़े बिना नहीं पनप सकती है। इसलिए सभी मंत्रालयों/ विभागों/ कार्यालय/ उपक्रम में वैज्ञानिक, सूचना प्रोद्योगिकी तथा तकनीकी विषयों में हिंदी के प्रयोग को अधिक से अधिक बढ़ाने की आवश्यकता है। राजभाषा हिंदी का शब्दकोश बहुत व्यापक है तथा वह वैज्ञानिक, सूचना प्रोद्योगिकी तथा तकनीकी विषयों को समाहित करने में समर्थ है। व्यावहारिक रूप से अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करने के

क्षेत्र	क्षेत्र में शामिल राज्य/संघ राज्य क्षेत्र
क	बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड राज्य और अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र
ख	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़ दमन और दीव तथा दादरा व नागर हवेली संघ राज्य क्षेत्र
ग	'क' और 'ख' क्षेत्र में शामिल नहीं किए गए अन्य सभी राज्य या राज्य क्षेत्र

लिए भाषा को सरल एंव सहज रूप मे लिखा जाए ताकि आम जनता को वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों के बारे में पर्याप्त जानकारी प्राप्त हो सके। जैसा कि यह सुस्पष्ट है कि वर्तमाान समय में लगभग सभी मंत्रालयों/ विभागों/ केन्द्रीय कार्यालयों/उपक्रमों में कम्प्यूटर, ई-मेल, वेबसाइट सहित सूचना प्रोद्योगिकी सूविधाएं उपलब्ध होने से वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों से अधिक से अधिक हिंदी प्रयोग करना और भी आसान हो गया है। वार्षिक कार्यक्रम के संबंध में निम्नलिखित बिन्दु विशेष रूप से विचारणीय है:

■ यह जरूरी है कि संसदीय राजभाषा समिति की रिपोर्ट के आठ खंडों पर जारी किए गए राष्ट्रपति के आदेशों का मंत्रालयों / विभागों / कार्यालयों द्वारा अनुपालन किया जाए।

■ कम्प्यूटर, ई-मेल, वेबसाइट सहित उपलब्ध सूचना प्रोद्योगिकी सूविधाओं का अधिक से अधिक उपयोग करते हुए हिंदी में काम को बढ़ाया जाए।

■ संबधित विभाग वैज्ञानिक, तकनीकी साहित्य हिंदी में छपवाकर उसे जनसाधारण के उपयोग हेतु उपलब्ध करवाने के लिए आवश्यक उपाय करें।

■ हिंदी शिक्षण योजना कैलेंडर वर्ष 2015 में समाप्त किया जाना प्रस्तावित है, इसलिए हिंदी, हिंदी टंकण/ आशुलिपि संबंधी प्रशिक्षण कार्य में तीव्रता लाएं और सभी संबंधितों को प्रशिक्षण दिलवाने का कार्य समय-सीमा में पूर्ण करें ताकि तत्संबधी लक्ष्यों को निर्धारित समय सीमा में प्राप्त किया जा सके।

■ राजभाषा कार्य से संबंधित अधिकारियों को विभाग के समस्त कार्यकलापों से परिचित कराया जाना आवश्यक है, जिससे कि वह अपने दायित्व अच्छी तरह निभा पाएं।

■ मंत्रालयों/ विभागों/ कार्यालय अपने विषयों से संबंधित संगोष्ठियां हिंदी माध्यम मे आयोजित करे।

■ प्रशिक्षण हेतु अधिक से अधिक अधिकारी/कर्मचारी नामित किए जाएं तथा संबधित अधिकारियों द्वारा व राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों (उ.स.नि.सं.स.)द्वारा केन्द्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/बैंको/उपक्रमों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया जाए।

■ मंत्रालय/ विभाग अपने यहाँ हिंदी सलाहकार समितियों का गठन/ पुनर्गठन अविलंब करते हुए उनकी बैठक नियमित आधार पर सुनिश्चित करें। बैठक में लिए गए निर्णय का पूरी तरह अनुपालन किया जाए।

■ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों (नराकास) की बैठकों का नियमित आधार पर आयोजन किया जाए तथा इनमें राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी (उ.स/नि/सं.स) भी समय-समय पर भाग लें।

■ संघ की राजभाषा नीति का आधार प्रेरणा और प्रोत्साहन है, किंतु राजभाषा संबंधी अनुदेशों का अनुपालन दृढ़तापूर्वक किया जाना चाहिए। जान-बूझकर राजभाषा संबंधी आदेशों का अवहेलना के लिए मंत्रालय/ विभाग अनुशासनात्मक कार्रवाई करने पर विचार कर सकते है।

■ मंत्रालयों / विभागों द्वारा सूचना प्रोद्योगिकी प्रणाली के विकास पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। शत-प्रतिशत कम्प्यूटरों में हिंदी मे काम करने की सुविधा विकसित की जाए तथा अंतर मंत्रालयी/अंतर विभागीय पत्राचारों के साथ-साथ पार्टियों के साथ किए जाने वाले पत्राचारों में ई-मेल/ इलेक्ट्रॉनिक संदेशों आदि में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया जाए।

■ तिमाही प्रगति रिपोर्ट और वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट प्राप्त करने हेतु राजभाषा विभाग के एक वेब आधारित ऑनलाइन सिस्टम विकसित करवाया है। केन्द्र सरकार के सभी कार्यालय/

उपक्रमों/बैंकों से अपेक्षित है कि आगे से सभी रिपोर्ट राजभाषा विभाग को उपरोक्त आनॅलाइन सिस्टम के माध्यम से ही भेजें। यह सिस्टम विभाग की वेबासाइट www.rakbzhh.nic.in पर उपलब्ध है।

राजभाषा विभाग सभी केन्द्रीय मंत्रालयों/ विभागों/ कार्यालयों और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको एवं केन्द्रीय उपक्रमों से समस्त कार्यपालिका को राजभाषा प्रयोग संबधी सौंपे गए संवैधानिक और सांविधिक दायित्वों के निष्पादन में और वर्ष 2014-15 के वार्षिक कार्यक्रम में उल्लिखित लक्ष्यों की पूर्ति की दिशा में अभीष्ट व स्वैच्छिक समर्थन की आशा और उपेक्षा करता है।

गृह राज्य मंत्री (ए.स)

गृह मंत्रालय,

भारत सरकार

1. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) के अंतर्गत संकल्प सामान्य आदेश, नियम अधिसूचनाएं, प्राशासनिक व अन्य रिपोर्ट प्रेस विज्ञप्तियां संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाले प्राशसनिक तथा अन्य रिपोर्ट सरकारी कागजात, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञापत्र निविदा सूचनाएं और निविदा- प्रारूप द्विभाषिक रूप में अंग्रजी और हिंदी दोनो में जारी किए जाएं। किसी प्रकार के उल्लंघन के लिए हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी को जिम्मेदार ठहराया जाएगा।

2. अधीनस्थ सेवाओं की भर्ती परीक्षाओं में अग्रेंजी के अनिवार्य प्रश्न पत्र को छोड़कर शेष विषयों के प्रश्न पत्रों के उत्तर हिंदी में भी देने की छूट की जाए और ऐसे प्रश्न पत्र अग्रेंजी तथा हिंदी दोनों भाषाओं में उपलब्ध कराए जाएं। साक्षात्कार में भी।

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश

वार्तालाप में हिंदी माध्यम की उपलब्धता अनिवार्य रूप से रहनी चाहिए।

केन्द्र सरकार के सभी मंत्रालयों, विभागों, तथा उनसे संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों तथा केंद्र सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रणाधीन निगमों, उपक्रमो, बैंको आदि मे सभी सेवाकालीन विभागीय तथा पदोन्नति परीक्षाओं में (अखिल भारतीय स्तर की परीक्षओं सहित अभ्यर्थियों को प्रश्न पत्रों के उत्तर हिंदी में भी देने की छूट दी जाए। प्रश्न पत्र अनिवार्यत: दोनो भाषाओं हिंदी और अग्रेंजी में तैयार कराएं जाए। जहां साक्षात्कार लिया जाना हो वहां भी प्रश्नों के उत्तर हिंदी में देने की छूट दी जाए।

3. सभी प्रकार की वैज्ञानिक/तकनीकी संगोष्ठियों तथा परिचर्चाओं आदि में वैज्ञानिकों आदि को राजभाषा हिंदी में शोध पत्र पढ़ने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाए। उक्त शोध पत्र मंत्रालयों/ विभागों/ कार्यालयों आदि के मुख्य विषयों से संबधित होने चाहिए।

4. क' तथा ख' क्षेत्रों में सभी प्रकार का प्रशिक्षण चाहे वह अल्पावधि का हो अथवा दीर्घवधि का, सामान्यत: हिंदी माध्यम से होना चाहिए। ग' क्षेत्र में प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षण सामग्री हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जाए और प्रशिक्षार्थी की मांग के अनुसार हिंदी और अंग्रेजी में उपलब्ध कराई जाए।

5. केन्द्र सरकार के कार्यालयों में जब तक हिंदी टंकण व हिंदी आशुलिपिक संबधी निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लिए जाते तब तक उनमें केवल हिंदी व हिंदी आशुलिपिक ही भर्ती किए जाएं।

6. अंतराष्ट्रीय संधियों और करारों को अनिवार्य रूप से हिंदी और अंग्रेजी

दोनो भाषाओ में तैयार कराया जाए। विदेशों में निष्पादित संधियों और करारों के प्रामाणिक अनुवाद तैयार कराके रिकॉर्ड के लिए फाइल में रखे जाएं।

7. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित बैंकों की शाखाओं में निम्नलिखित कार्य हिंदी में किए जाएं-ग्राहकों द्वारा हिंदी मे भरे गए आवेदनों और ग्राहकों की सहमति से अंग्रेजी में भरे गए आवेदनों पर जारी किए जाने वाले डिमाण्ड ड्राफ्ट, क्रेडित कार्ड, डेबिट कार्ड सभी प्रकार की सूचियां विवरणियां, सावधि जमा रसीदे, चैक बुक संबंधी पत्र आदि दैनिक बही, मास्टर प्रेषण बही, पास बुक, लॉग बुक में प्रविष्टियों, प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र, सुरक्षा ग्राहक सेवा संबधी कार्य, नये खाते खोलना, लिफाफों पर पते लिखना, कर्मचारियों के यात्रा भत्ते, अवकाश, भविष्य निधि, चिकित्सा, संबधी कार्य, बैठकों की कार्यसूची कार्यवृत्त आदि।

8. विदेश स्थित भारतीय कार्यालयों सहित सभी मत्रांलयो, कार्यालयों, विभागों, आदि को लेखन सामग्री, नाम पट्ट, सूचना पट्ट फार्म प्रक्रिया संबधी साहित्य रबड़ की मोहरें निमंत्रण पत्र आदि अनिवार्य रूप से हिंदी-अग्रेंजी में बनवाएं जाए।

9.भारत सरकार के मत्रांलयों, कार्यालयों, विभागों, बैंकों, उपक्रमों आदि द्वारा असांविधिक प्रक्रिया साहित्य जैसे नियम, कोड मैनुअल, मानक फार्म आदि को अनुवाद कराने के लिए केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो को भेजा जाए।

10. अनुवाद कार्य तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को केन्द्रीय ब्यूरों में अनिवार्य अनुवाद प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए। ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अनुवाद के प्रशिक्षण पर नामित किया जा सकता है जिन्हें स्नातक स्तर पर हिंदी अंग्रेजी दोनो भाषाओं का ज्ञान हो तथा जिनकी सेवाओं का उपयोग कार्यालय द्वारा इस कार्य के लिए किया जा सकता है ।

11. भारतीय प्रशासनिक सेवा और अन्य अखिल भारतीय सेवा के अधिकारियों के लिए लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी में प्रशिक्षण के दौरान हिंदी भाषा का प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से दिया जाता है ताकि सरकारी कामकाज में वे इसका प्रयोग कर सकें। तथापि अधिकांश अधिकारी सेवा में आने के पश्चात सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग नहीं करते। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों में सही संदेश नहीं जाता। परिणामस्वरूप, सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग अपेक्षित मात्रा में नहीं हो पाता। मंत्रालयों/ विभागों/ कार्यालयों /उपक्रमों आदि के वरिष्ठ अधिकारियों का यह संवैधानिक दायित्व है कि वह अपने सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रेरणा मिलेगी तथा राजभाषा नीति के अनुपालन में गति मिलेगी।

12. सभी मंत्रालयों/ विभागों आदि हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए चलाई गई विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का अपने संबद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालयों में व्यापक प्रचार-प्रसार करें। ताकि अधिक से अधिक अधिकारी/कर्मचारी इन योजनाओं का लाभ उठा सकें और सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो।

13. तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑनलाइन सिस्टम द्वारा प्रत्येक तिमाही की समाप्ति को अगले माह की 15 तारीख तक राजभाषा विभाग को उपलब्ध करा दी जाए।

14. सरकार की राजभाषा नीति के प्रति अधिकारियों/कर्मचारियों को सुग्राही बनाने की दृष्टि से यह

आवश्यक है कि सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में हुई

प्रगति की समीक्षा को मात्र राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों तक ही सीमित न रखा जाए। इस संबध में मॉनीटरिंग को और अधिक प्रभावी और कारगर बनाने के लिए यह जरूरी है कि मंत्रालयों/ विभागों/ कार्यालयों के प्रशासनिक प्रधानों द्वारा ली जाने वाली प्रत्येक बैठक में इस पर नियमित रूप से विस्तृत चर्चा की जाए और इसे कार्य सूची की एक स्थानीय मद के रूप में शामिल किया जाए।

15. प्रशिक्षण और कार्यशालाओं सहित राजभाषा हिंदी संबंधी कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालय में बैठने के लिए अच्छा व समुचित स्थान भी उपलब्ध कराया जाए ताकि वे अपने दायित्वों का निर्वाह ठीक तरह से कर सके।

16. राजभाषा विभाग द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रशिक्षण कार्याक्रमों में मंत्रालय विभाग/ कार्यालय आदि नियमित रूप से अपने कर्मचारियों को नामित करें और नामित कर्मचारियों को निदेश दें कि वे नियमित रूप से कक्षाओं में उपस्थित रहें पूरी तत्परता से प्रशिक्षण को बीच मे छोड़ने या परीक्षाओं में बैठने वाले मामलों की कड़ाई से निपटा जाए।

17. अनुवादकों को सहायक साहित्य, मानक शब्दकोश (अंग्रेजी-हिंदी व हिंदी-अंग्रेजी) तथा अन्य तकनीकी शब्दावलियां उपलब्ध कराई जाएं ताकिं वे अनुवाद कार्य में इनका उपयोग करें।

18. सभी मंत्रालयों/ विभागों/ कार्यालयों आदि हिंदी में प्रशिक्षण के लिए नामित अधिकारियों/कर्मचारियों के लाभ के लिए 'लीला हिंदी प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ, आदि सॉफ्टवेंयर के उपयोग के लिए कम्पयूटर की सुविधा उपलब्ध करवाए।

19. सभी मंत्रालयों/ विभागों/ कार्यालयों आदि अपने-अपने दायित्वों से संबधित विषयों पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने तथा उपने विषयों से संबधित शब्द भंडार को समृद्ध करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं।

20. सभी मंत्रालयों/ विभागों/ कार्यालयों आदि अपने केन्द्रीय सेवाओं के प्रशिक्षण सस्थानों में राजभाषा हिंदी में प्रशिक्षण की व्यवस्था उसी स्तर पर करें जिस स्तर पर लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी में कराई जाती है और अपने विषयों से संबधित जिससे प्रशिक्षण के बाद अधिकारी अपने कामकाज सुविधापूर्वक राजभाषा हिंदी में कर सकें।

21. सभी मंत्रालयों / विभागों / कार्यालयों संस्थान आदि अपने कार्यालय में हिंदी कार्य का माहौल तैयार करने के लिए हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहे हैं। इन पत्रिकाओं में विशेषकर उक्त कार्यालय के सामान्य कार्यों तथा राजभाषा हिंदी से संबधित आलेख किए जाए।

22. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की छमाही बैठकों में सदस्य कार्यालय के प्रशासनिक प्रमुख अनिवार्य रूप से भाग लें।

23. सभी मंत्रालय विभाग अपने संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों के बारे में वर्ष 2015-16 के वार्षिक कार्यक्रम से संबंधित समेकित अनुपालन रिपोर्ट राजभाषा विभाग को 31 मई, 2016 तक भिजवाना सुनिश्चित करें।

24. सभी मंत्रालयों/ विभागों/ कार्यालयों आदि 'लीला अर्थात् लर्निंग इंडियन लैंग्वेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग के लिए कम्प्यूटर सुविधा उपलब्ध कराए।

25. कम्प्यूटर पर हिंदी प्रयोग के लिए केवल यूनीकोड एनकोंडिग का प्रयोग किया जाए।

स्मार्ट शहरों से पहले जरूरी है छोटे शहरों का विकास

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के उत्तर प्रदेश उप-क्षेत्र से मेरठ, गाज़ियाबाद, बुलंदशहर, गौतम बुद्धनगर, बागपत, हापुड, मुजफ्फनगर जिले शामिल किए गए हैं। लगभग सभी क्षेत्र जो दिल्ली की सीमा से लगे हैं, वे लगभग विकसित हैं, चाहे वे हरियाणा मे आते हो या फिर राजस्थान मे आते हों ।

जिला बुलंदशहर के अंतर्गत विभिन्न कस्बे/तहसील जिसमे गुलावठी, शिकारपुर, जहांगीराबाद, अनूपशहर, पहासू, स्याना तथा शहरों जैसे कि सिकंदराबाद तथा खुर्जा के नागरिक जिला बुलंदशहर का विकास चाहते हैं ।

सिकंदराबाद एक ऐतिहासिक शहर है जो लगभग 1498 मे सिकंदर लोधी के दौरान बसाया गया था । चिश्ती और कुछ अन्य स्मारक इस इलाके मे देखे जा सकते है। यह शहर दुग्ध उत्पादन, कोल्ड- स्टोरेज और पाइप फ़ैक्टरियो के लिए प्रसिद्ध हैं। सिकंदराबाद एक बहुत विशाल औद्योगिक क्षेत्र है, जो UPSIDC (उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास निगम) के द्वारा विकसित किया गया था। इसमे अनेकों राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय कंपनिया सफलतापूर्वक कार्य कर रही है।

खुर्जा, भारतवर्ष के उत्तर प्रदेश के जिला बुलंदशहर के अंतर्गत आने वाला शहर है। यह दिल्ली से लगभग 85 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। खुर्जा शहर देश की Ceramic खपत का अधिकतर भाग उपलब्ध करवाता है, इसलिये यह शहर देश के Ceramic शहर के नाम से भी जाना जाता हैं ।

जिला बुलंदशहर के निकट नरोरा परमाणु बिजली सयंत्र का होना अपने आप मे एक विशेष गर्व करने करने वाली बात है, जोकि भारतवर्ष के पाँच सयंत्रों मे से एक है। इस परमाणु बिजली सयंत्र की आधारशिला 4 जनवरी 1974 को रखी गयी थी। पहली जनवरी 1991 को इस सयंत्र के कमर्शियल ऑपरेशन के बाद से इसमें सुधार आया है, लेकिन स्थिति मे अभी काफी सुधार की जरूरत हैं। जिला बुलंदशहर को 24 घंटे बिजली की आपूर्ति दिये जाने की जरूरत है। एक अध्ययन के अनुसार यह भारतवर्ष के 14 से ज्यादा राज्यो को बिजली की आपूर्ति करा रहा है। किन्तु जिला बुलंदशहर के नागरिक अभी वर्तमान स्थिति से संतुष्ट नहीं दिखते।

इसी तरह दिल्ली और बुलंदशहर को रेल से जोड़ने का काम और बुलंदशहर के निकट चोला रेल्वे स्टेशन का विकास भी बुलंदशहर जिले के विकास के मुद्दे मे शामिल है। जो कि मात्र 16 किलोमीटर का टुकड़ा है। इस प्रोजेक्ट के क्रियांनवन के बाद बुलंदशहर जिले के विकास मे काफी उम्मीद की जा सकती है।

अनूपशहर भी छोटी काशी के नाम से

काफी प्रसिद्ध हैं। यह पवित्र गंगा नदी के किनारे पर स्थित है। अनूपशहर 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ, घटनाओं का एक स्थल रहा है। 10 मई 1857 को क्रांति का एक संदेश पंडित नारायण शर्मा के द्वारा अलीगढ़ से बुलंदशहर तक पहुँचाया गया। दादरी और सिकंदराबाद के गुर्जरों ने निरीक्षण बंगले, टेलीग्राफ कार्यालयों और सरकारी भवनो को नष्ट कर दिया, क्योंकि वे विदेशी शासन के प्रतीक थे। प्रथम वाइसरॉय, (जिसको राजप्रतिनिधि भी बुलाया जाता है) लॉर्ड कैनिंग ने दिल्ली कूच के दौरान अपनी सेना के साथ अनूपशहर मे कैंप किया था।

स्याना प्राथमिक रूप से एक कृषि का केंद्र है। खेती-बाढ़ी इसकी अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार रहा हैं। इसको पश्चिमी उत्तर प्रदेश का "आम का कटोरा" के नाम से भी जाना जाता है।

स्याना उप-मंडल इसकी आमों की प्रजातियों के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ काफी एकड़ मे बाग हैं। 70% लोग खेती पर निर्भर हैं, स्याना मे मुख्य खेती गेहूँ, चावल, गन्ना, बाजरा, मक्का और अन्य चीजे हैं। स्याना क्षेत्र के अधिकतर लोग खेतो की सिंचाई के लिये मध्य गंगा नहर के पानी का प्रयोग करते हैं। स्याना डेयरी उद्योग का भी एक केंद्र है। स्याना को एक फल प्रदेश घोषित किया जा चुका है।

कस्बा गुलावठी को शहीद नगरी के नाम से भी जाना जाता है जो वर्ष 1930 मे 12 सितम्बर की क्रांति के दौरान देश की स्वतन्त्रता के लिये शहीद हुए थे, जिनमे चौधारी भगवान सहाय, श्री भरत सिंह, श्री नवल सिंह, श्री हरिया सिंह व छुटटन लाल जी शहीद हुए थे। स्वतंत्र भारत मे प्रथम बार वर्ष 1948 मे 12 सितम्बर के ही दिन वीर मेला का आयोजन तब के जिलाधिकारी बुलंदशहर आई.ए.एस श्री कैप्टन भगवान सिंह के द्वारा विशाल समारोह से प्रारम्भ हुआ। तब से विभिन्न समाजसेवियों के द्वारा शहीदों की याद मे शहीद मेला का आयोजन कराया जाता रहा हैं। इन शहीदों की शहादत के प्रतीक के रूप मे व उनकी याद मे कस्बा गुलावठी मे एक शहीद स्मारक भी स्थापित किया गया था।

कस्बा गुलावठी जिला हापुड़ से मात्र 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। भारतवर्ष मे खाद्य स्टोरेज के लिए चार साइलो है जिनमे एक हापुड़ मे स्थित है। जबकि तीन अन्य भारतवर्ष के तीन महानगरो कलकत्ता, मुंबई और मद्रास मे स्थित है। उत्तर भारत का यह अपना अकेला साइलो है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से कस्बा गुलावठी मे जिंदल फ़ैक्टरी के अलावा कोई नयी बड़ी फ़ैक्टरी नहीं लगी है ताकि लोगो को रोजगार उपलब्ध कराये जा सके। जिंदल फ़ैक्टरी भी अब इतनी क्रियाशील नहीं रही है। कस्बा गुलावठी का संसदीय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर व विधानसभा क्षेत्र सिकंदराबाद पड़ता है, जो जिला बुलंदशहर के अंतर्गत आता है। मुख्य रेलगाड़ियो का स्टाप कस्बा गुलावठी मे नहीं होने के कारण रेलयात्रियो को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता हैं। गुलावठी-धौलना क्षेत्र मे भी नए व प्रस्तावित प्रोजेक्ट्स काभी लंबे समय से लंबित है।

नये उद्योग, अस्पताल, सड़कों, विद्यालयों, महाविद्यालयों, प्रयोगशालायो, की इन जिला बुलंदशहर के छोटे कस्बों/तहसीलों जैसे कि गुलावठी, शिकारपुर, जहांगीराबाद, अनूपशहर, पहासू, स्याना और अन्य छोटे कस्बों/तहसीलों मे जरूरत है। ये कस्बे/तहसीले जिला बुलंदशहर के अन्य शहरों जैसे कि सिकंदराबाद तथा खुर्जा के मुकाबले काफी कम विकसित है।

जिला बुलंदशहर के गावों/कस्बों मे उचित मेडिकल सुविधाओं के अभाव को देखते हुए एक एम्स के स्तर का सरकारी अस्पताल बनाये जाने की जरूरत है। जिला बुलंदशहर के सरकारी अस्पताल का आधुनिकरण किया जाना चाहिए। भविष्य मे शहरों जैसेकि बुलंदशहर, सिकंदराबाद तथा खुर्जा को स्मार्ट-शहरों की सूची मे लाने के लिये प्रयास किए जाने की जरूरत है।

-संजीव कुमार

टीसीआईएल की सफलता गाथाएं

व्यावसायिक और सामाजिक लक्ष्य

टीसीआईएल भारत सरकार का एक उद्यम है जो दूरसंचार विभाग, संचार एंव प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन कार्य कर रहा है। एक परियोजनामूलक संगठन के रूप में टीसीआईएल का मूल उदेश्य य संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में टर्नकी परियोजनाओं का निष्पादन करना है और अत्याधुनिक, विश्वसनीय, चिरस्थायी दूरसंचार व सूचना प्रौद्योगिकी अवसंरचना के विकास के लिए समुचित अवसरों को तलाश कर उन पर काम करते हुए वैश्विक स्तर पर समाधान प्रस्तुत करना है। भारत सरकार द्वारा प्रारंभ किए गए महत्वपूर्ण अभियान डिजिटल इंडिया का दृष्टिकोण भी वास्तव में यही है। इसके अलावा टीसीआईएल कौशल विकास को लेकर भी गंभीरतापूर्वक प्रयास कर रहा है क्योंकि टीसीआईएल का मानना है कि संपूर्ण व्यावसायिक विकास की आधारशिला ही कौशल विकास है।

टीसीआईएल ने सरकारी उपक्रमणों के अनुपालन में निम्नलिखित क्षेत्रों में उपक्रमणों के विकसित करने के लिए नीतियां बनाई हैं

- **मेक इन इंडिया**
- **स्वच्छ भारत अभियान**
- **कौशल निर्माण**
- **डिजिटल इंडिया**
- **मेक इन इंडिया**

टीसीआईएल संचार एंव सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में टर्नकी परियोजनाओं का निष्पादन करने वाला एक अग्रणी परामर्शी संगठन है जो इन क्षेत्रों के अलावा परिवहन, स्वास्थ्य, शिक्षा, तेल एंव गैस, एमएसएमई जैसे क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण परियोजनाओं का निष्पादन कर रहा है।

दूरसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में आए परिवर्तन के चलते टीसीआईएल ने भी अपने कार्यों में विविधता लाते हुए सिविल, शिक्षा और अन्य सेक्टरों में कदम रखा है और इन क्षेत्रों में कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया है।

भारतीय दूरसंचार उत्पादों और सेवाओं के भारत विशिष्ट मानक विकास और निर्यात संवर्धन के एक भाग के तौर पर टीसीआईएल भारत दूरसंचार मानक विकास निगम (टीएसडीएसआई) और दूरसंचार उपकरण एंव सेवा निर्यात प्रोत्साहन परिषद (टीईपीसी) जैसे दूरसंचार निकायों में सक्रिय रूप से शमिल है।

टीसीआईएल ने भारत में ऑप्टिकल फ़ाइबर केबल के विनिर्माण के लिए जापान की फुजीकुरा और तमिलनाडु सरकार के साथ भागीदारी करते हुए तमिलनाडू टेलीकॉम लि. (टीटीएल) में निवेश किया है।

स्वच्छ भारत अभियान में टीसीआईएल का योगदान

स्वच्छ भारत अभियान मूल रूप से वायु, जल, कार्यालय, सार्वजानिक एंव निजी परिसर और ई-कचरा को प्रबंधित करने पर केंद्रित है।

टीसीआईएल ने स्वच्छ भारत कार्यक्रम के दायरे में रहते हुए नदियों के जल की स्वच्छता संबंधी निगरानी और प्रबंधन के लिए एक दूरसंचार एंव सूचना प्रौद्योगिकी आधारित समाधान विकसित किया है जो एक स्वच्छ वातावरण को बनाए रखने के लिए प्रभावी नियंत्रण प्रणाली प्रदान करता है।

टीसीआईएल ने सरकार और सैक्टर संगठनों के साथ सहयोग करते हुए ई-कचरा को एकत्रित करने और उनका निपटान करने के लिए ई-कचरा प्रबंधन को एक व्यावसायिक रूप प्रदान करने की पहल की है।

नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) और सतत परियोजनाओं के अंश के रूप में टीसीआईएल ने ऐसे स्थानों पर, जहां इसकी परियोजनाएं चल रही हैं, के निकट स्थित विद्यालयों में कन्या शौचालयों का निर्माण करवाया। साथ ही अपने कार्यालय में पुराने रिकॉर्ड और कागज़ों के निपटान कार्य की भी

टीसीआईएल द्वारा निरंतर समीक्षा की जाती है। साथ ही यह प्रयास भी किया जाता है कि टीसीआईएल में कागज़ों और दस्तावेज़ों का कम उपयोग हो और अधिक से अधिक रिकॉर्ड को इलैक्ट्रॉनिक रूप से दर्ज किया जाए। टीसीआईएल की ईआरपी प्रणाली इसी का एक उदाहरण है जहां प्रत्येक कर्मचारी से संबधित डेटा कंप्यूटर में दर्ज है और हर प्रकार के आवेदन के लिए कर्मचारियों द्वारा कागज़ों की बजाए ईआरपी प्रणाली का उपयोग किया जाता है।

टीसीआईएल अपनी ऊर्जा अनिवार्यताओं की भी निरंतर समीक्षा करता है और इसी के चलते टीसीआईएल में परंपरागत लाइटिंग के स्थान पर एलईडी लाइट्स को शामिल किया गया है। अपने पार्किंग क्षेत्र का सदुपयोग करते हुए यहां सौर ऊर्जा प्रणाली की भी स्थापना की गई है।

टीसीआईएल ने जल प्रबंधन के लिए वर्षा जल संचयन प्रणाली की भी स्थापना की है।

टीसीआईएल का सिविल और वास्तुकला प्रभाग स्वच्छ भारत अभियान के उपक्रमणों को और आगे बढ़ा रहा है तथा इस प्रभाग द्वारा जिन भवनों के निर्माण का कार्य किया जा सकता है, उन्हें पूर्णतया हरित और वातावरण हितैषी रूप में डिज़ाइन किया गया है।

टीसीआईएल अपने नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व और चिरस्थायी विकास कार्यक्रम, उपक्रमणों और सरकारी दिशनिर्देशों व अनुदेशों के तहत अपने कर्मचारियों के बीच जागरूकता फैलाने के हरसंभव प्रयास कर रहा है। टीसीआईएल द्वारा स्वच्छ भारत मिशन को लेकर निरंतर रूप से विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। विगत एक वर्ष के दौरान स्वच्छ भारत, मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया और कौशल जैसे विषयों पर समय-समय पर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं जैसे कि निबंध लेखन, वाद-विवाद, प्रस्तुतीकरण आदि का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया और उन्हें पुरस्कारों से सम्मानित किया। टीसीआईएल इन उपक्रमणों पर अपने सीएसआर बजट का कुछ हिस्सा खर्च कर रहा है। वर्ष 2014-15 में टीसीआईएल द्वारा इन गतिविधियों पर 29 लाख रु खर्च किए गए। टीसीआईएल एक परियोजना आधारित संगठन है, अत: निश्चित रूप से टीसीआईएल द्वारा किए जाने वाले सभी उपक्रमण व्यवसाय और परियोजना विकास पर केंद्रित होते हैं।

➢ कौशल निर्माण

राष्ट्र निर्माण और डिजिटल इंडिया मिशन के एक भाग के रूप में कौशल विकास और कौशल निर्माण एक बहु-उद्देश्यीय अनिवार्यता है जिसमें दूरसंचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी में ही नहीं बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, एमएसएमई, तेल, गैस, परिवहन इत्यादि अर्थव्यवस्था से जुड़े सभी क्षेत्रों में भी कौशल का विकास किया जाना शामिल है।

टीसीआईएल ने आईसीटी अवसंरचना दूर-चिकित्सा को कार्यान्वित किया है जिसके माध्यम से देश के कोने-कोने तक सीमित विशेषज्ञता और संसाधनों के माध्यम से उच्च स्तरीय शिक्षा, प्रशिक्षण और स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान की जा सकती हैं। टीसीआईएल ने डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की स्वप्निल परियोजना यानि पैन-अफ्रीकी परियोजना को कार्यान्वित किया है जिसके माध्यम से टीसीआईएल अफ्रीका के 48 देशों में भारतीय विश्वविद्यालयों और अस्पतालों से दूर-शिक्षा और दूर-चिकित्सा जैसी सुविधाएं प्रदान कर रहा है। पैन अफ्रीकी परियोजना सरकार द्वारा शुरू किए गए बहुमूल्य डिजिटल इंडिया और कौशल विकास के लिए एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है। भारतीय संस्थानों से दूर-शिक्षा और दूर-चिकित्सा और मद्रास विश्वविद्यालय की वर्चुअल विश्वविद्यालय परियोजना के लिए इस नेटवर्क को सार्क देशों हेतु भी सफलतापूर्वक अपनाया जा चुका है।

टीसीआईएल ने भारत में दूर-शिक्षा और दूर-चिकित्सा नेटवर्कों के विकास हेतु संचार मंत्रालय और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के समक्ष भी इसी प्रकार के प्रस्ताव रखे हैं।

ये नेटवर्क कौशल विकास की संपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने वाली एक समान अवसंरचना के रूप में कार्य करेंगे।

अपने व्यावसायिक परिचालनों के अंश के तौर पर टीसीआईएल ने दूरसंचार और

सूचना प्रौद्योगिकी विकास को सक्षम करने हेतु एएलटीटीसी और एनआईईएलआईटी के साथ समझौता ज्ञापनों पर भी हस्ताक्षर किए हैं।

➢ डिजिटल इंडिया

दूरसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी, परिवहन, स्वास्थ्य, तेल और गैस, एमएसएमई इत्यादि क्षेत्रों में कार्य करने के लिए पूरी तरह से सक्षम है। अपने व्यापक अनुभव के साथ टीसीआईएल डिजिटल इंडिया कार्यक्रम में अपना योगदान देते हुए निम्नलिखित सेवाओं में योगदान दे रहा है

- टर्नकी परियोजनाएं, परामर्शी,
- साध्यता अध्ययन,
- नियोजन,
- डिजाइन,
- इंजिनियरिंग
- निष्पादन,
- गुणवत्ता आश्वासन,
- लेंडर इंजिनियरिंग,
- तृत्तीय पक्ष लेखापरीक्षा,
- परियोजना प्रबंधन,
- क्षमता निर्माण,
- दूरसंचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में परिचालन एवं रखरखाव
- वायर्ड लाइन परियोजनाएं – ऑप्टिकल फ़ाइबर नेटवर्क; एफटीएच, ओपीजीडब्ल्यू, सबमरीन केबल,
- वायरलेस परियोजनाएं – मोबाइल संचार, टेट्रा, 3जी, 4जी, ईएमएफ लेखापरीक्षा
- सूचना प्रौद्योगिकी परियोजनाएं – ब्रॉडबैंड नेटवर्क, डेटा केंद्र, ई-नेटवर्क्स, दूर-शिक्षा, दूर-चिकित्सा, ई-अभिशासन, सूरक्षा और सर्वेक्षण, आपदा प्रबंधन, आईपीवी6
- प्रबंधित सेवाएं – सह-स्थान सेवाएं, ई-प्रापण, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, प्रमाणन सेवा,
- सिविल एवं वास्तुकला परियोजनाएं – साइबर पार्क्स, भवन एवं सड़क निर्माण
- नए उपक्रमण जिसमें सौर ऊर्जा, ई-कचरा प्रबंधन, पॉवर लाइन परियोजनाएं नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व

टीसीआईएल डिजिटल इंडिया कार्यक्रम से संबंधित और राष्ट्रीय महत्व की कई परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा कर चुका है और कई परियोजनाएं पूरी होने के चरण में हैं। इन परियोजनाओं में प्रमुख हैं

- बीएसएनएल के लिए रक्षा (सेवा) की स्पैक्ट्रम ओएफसी परियोजना हेतु नेटवर्क जिसके तहत अनुमानित 950 कि.मी की ओएफसी केबल बिछाई जानी है,
- बीएसएनएल के लिए रक्षा (नेवी) की ओएफसी परियोजना जिसके तहत अनुमानित 300 कि. मी. ओएफसी केबल बिछाई जानी है,
- डाक विभाग ग्रामीण हार्डवेयर परियोजना का कार्यान्वयन जिसके तहत डाक विभाग के 1,,29, 000 से भी अधिक अतिरिक्त विभागीय कार्यालयों में हैंडहेल्ड उपकरणों की आपूर्ति करते हुए डिजिटल कनेक्टिविटी का प्रसार किया जाना है।
- सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षा हेतु उत्तर प्रदेश, ओडीशा और दिल्ली के 320 से भी अधिक स्कूलों में सूचना प्रौद्योगिकी अवंसरचना प्रदान करना,
- कानपुर, गाज़ियाबाद और इलाहाबाद में 10 पुलिस स्टेशनो में ई-अभिशासन परियोजनाओं का कार्यान्वयन,
- आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, जम्मू व कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और मेघालय में अपराध और अपराध ट्रैकिंग प्रणाली की स्थापना
- उपर्युक्त के आलावा, टीसीआईएल ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए दूर-शिक्षा और दूर-चिकित्सा परियोजनाओं में सक्रिय रूप से योगदान दे रहा है।
- टीसीआईएल पूरे अफ्रीका में भारतीय विश्वविद्यालयों और अस्पतालों से दूर-शिक्षा और दूर-चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करने के लिए बहुप्रतिष्ठित पैन-अफ्रीकी ई-नेटवर्क परियोजना का कार्यान्यन कर रहा है।

टीसीआईएल में हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन

टीसीआईएल में होली पर्व के अवसर पर हास्य कवि सम्मेलन के आयोजन की परंपरा वर्षों से चली आ रही है। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए दिनांक 22-03-2016 को टीसीआईएल में रंगारंग सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में प्रख्यात कवि श्री महेंद्र शर्मा, श्री चिराग जैन, श्री अशोक स्वतंत्र और सुश्री पद्मिनी शर्मा ने भाग लिया। मंच का संचालन श्री चिराग जैन ने किया। सभी कवियों ने अपनी रचनाओं से शानदार समां बांधा और टीसीआईएल में कवि सम्मेलन में पहली बार शिरकत कर रही सुश्री पद्मिनी शर्मा के गीतों ने सबका मन मोह लिया। अंत में निदेशक (परियोजनाएं) महोदय ने सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए सभी कवियों को बधाई दी और समस्त टीसीआईएल परिवार की ओर से आभार व्यक्त किया।

राजभाषा : महत्वपूर्ण जानकारी

- विश्व के लगभग 133 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। ऐसे देशों में जहां भारतीय मूल के लोगों की संख्या अधिक है, जैसे फिजी, गुआना, मॉरीशस, नेपाल, कम्बोडिया, त्रिनिदाद आदि के स्कूलों में हिंदी अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाती है।
- प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन नागपुर, दूसरा मॉरीशस तथा तीसरा हिंदी सम्मेलन नई दिल्ली में हुआ था। पश्चिमी देशों में लंदन विश्वविद्यालय का स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज सबसे प्राचीन संस्था है जिसमें हिंदी पढ़ाने की व्यवस्था है।
- फ्रांस दूसरा बड़ा देश है, जहां हिंदी एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। उत्तरी अमेरिका में हिंदी पढ़ाने वाले 114 केन्द्र है, जबकि सोवियत रूस में हिंदी शोध संस्थान है।
- दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना चेन्नई में 1927 में हुई थी।
- ब्रिटिश भारत में 1803 में पहला परिपत्र जारी किया गया ताकि सभी नियमों, विनियमों का हिंदी में अनुवाद किया जाए।
- दक्षिण में हिंदी का आगमन अलाउद्दीन खिलजी द्वारा 1296 के आक्रमण के बाद शुरू हुआ। 14 वी सदी में अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा, बीदर, आदिलशाही, कुतबशाही, बरीदशाही आदि राज्यों ने हिंदी को अपनी राजभाषा बनाया था।
- हिन्दुस्तान लैंग्वेज, नामक पहला हिंदी ग्रामर जॉन जोशना केटलर ने 1698 में लिखा।
- तारिक फरिश्ता, नामक पुस्तक के अनुसार बीजापुर और गोलकुण्डा के बहमनी साम्राज्य की राजभाषा हिंदी थी।
- तंजावुर के राजा श्री शाह ने हिंदी में 'विश्वजीत' और 'आधाविलास' नामक दो नाटक क्रमशः 1674 और 1711 में लिखे
- देवनागरी टाइप अक्षर सर्वप्रथम 1667 में यूरोप में तैयार किए गए।
- प्रसिद्ध पश्चिमी विद्वानों- एडबीनग्रीव्स, ग्राडस, ग्रियर्सन, हार्नले, रोडाल्फ टेसीदरी, ओल्डाम, पीनकैट इत्यादि ने हिंदी के विकास में बहुत योगदान किया।
- संयुक्त राष्ट्र में हिंदी स्वीकार करने का प्रस्ताव मारीशस द्वारा रखा गया।
- वर्ष 1909 से मॉरीशस में हिन्दुस्तान नामक तथा फिजी में 'फिजी समाचार' नाम से हिंदी साप्ताहिक छप रहें है।
- प्रतिवर्ष करीब 3000 हिंदी पुस्तकें प्रकाशित होती है।

"राजभाषा भारती" से साभार

कार्यालयी कार्य में पारदर्शिता और विश्वास

पारदर्शिता - खुलापन, सूचना की आसानी से प्राप्ति और उत्तरदायित्व। किसी भी कार्यालय व्यवस्था में जवाब देही और पारदर्शिता बुनियादी मूल्य है। विशेष कर उन कार्यालयों में जहां अधिकारियों एवं कर्मचारियों या जुड़े अन्य संगठन हों। सभी से आशा है कि वे कर्मचारियों के प्रति जवाबदेह और पारदर्शी होगें।

सरकारी कार्यालयों को जवाब देह बनाने और उनके कामकाज में पारदर्शिता लाने के लिए भारतीय संसद ने 15 जून 2005 को सूचना का अधिकार कानून को पारित किया। इसके तहत केंद्र और राज्य स्तर पर सूचना आयुक्त नियुक्त किए गए और नागरिको को सरकार से सूचना मांगने का अधिकार दिया गया। सरकार के लिए यह सूचना या इसे न देने के कारण को 30 दिनों के भीतर, मुहैया कराना अनिवार्य बना दिया गया।

सरकारी कार्यालयों में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग कर काफी हद तक पारदर्शिता को बढ़ाया जा सकता है साथ ही कार्य की गुणवत्ता में भी सुधार किया सकता है।

सरकार की राष्ट्रीय ई-शासन योजना इसका एक उदाहरण है। कार्यालयी कार्यो में पारदर्शिता मैनेजमेंट द्वारा लिए जा रहे निर्णयो पर होनी चाहिए जैसे:-

टेंडर On line system के द्वारा जो Payment RTGS के द्वारा हो C. R. किसी अधिकारी या कर्मचारी का On line CCTV कैमरा सब जगह पर लगे होने चाहिए।

विश्वास - जिस चीज के ऊपर कोई भी व्यक्ति अपनी निर्भरता रखता है उसे विश्वास कहते है। विश्वास पर ही पूरी दुनिया, समाज, व्यवसाय, संगठन, परिवार इत्यादि टिका हुआ है। पारदर्शिता विश्वास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। पारदर्शिता जितनी ज्यादा होगी विश्वास उतना ही अटूट रहेगा।

कार्यालयी कार्य में आपसी मेल मिलाप और भाईचारे की भावना से भी कार्यालयों में विश्वास का वातावरण तैयार होता है। जिसे केवल पारदर्शिता के द्वारा ही बढ़ाया जा सकता है। कार्यालयी कार्यो में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच जितना भेदभाव प्रबंधन के द्वारा उतना ही अविश्वास/भेदभाव बढ़ेगा जोकि किसी संस्था को आगे बढ़ाने में बाधक होगा।

कार्यालयी कार्य में पारदर्शिता-जैसे किसी कर्मचारी को कार्यालयी नियमों के खिलाफ कुछ अन्य सुविधाएं दी जा रही है। जैसे स्टार लगाकर प्रमोशन देना ए + देना इत्यादि पारदर्शी होना चाहिए। अगर प्रबंधन द्वारा इस पर ध्यान न दिया जाए। तो विश्वास की कमी होगी और बिना विश्वास के संगठन चल नहीं सकता, चाहे प्रबंधन कितना भी प्रयास कर ले।

सही या Positive कार्य करने के लिए विश्वास की जरूरत तो है ही गलत कार्य को अन्जाम देने के लिए और उसके दण्डों के प्रावधान से बचने के लिए भी विश्वास की जरूरत होती है।

राम, रावण के युद्ध में राम और लक्ष्मण को एक दूसरे पर विश्वास था। वही रावण और विभिषण के बीच विश्वास खत्म हो चुका था। राम की जीत हुई और रावण हार गया और अपना समूल नष्ट कर बैठा।

कार्यालयी कार्य में विश्वास, प्रबंधन की कार्यशैली के आधार पर पड़ता है कहने के आधार पर नहीं। इस प्रकार कर्मचारियों एवं अधिकारियों में विश्वास बढ़ाने के लिए किसी भी कार्य का पारदर्शी होना परम आवश्यक है।

-वीरेंद्र कुमार पाण्डेय

कार्य करने की प्रेरणा

किसी भी देश के विकास के लिए भाषा एक सशक्त माध्यम होती हैं, और वह उसे एकता के धागे में पिरोकर रखती हैं। आज हम भारतवासियों को इस बात पर गर्व तो होता हैं कि हम हिंदुस्तानी हैं, मगर इस बात से कोई गर्व की अनुभूति नहीं होती कि हम हिन्दी भाषी हैं। बल्कि कई बार लोगों को इस बात पर गर्व होता है कि हम हिन्दी नहीं आती हैं। भारत में पचास प्रतिशत से अधिक लोग हिन्दी बोलते व लिखते हैं। हिन्दी कई राज्यों के कामकाज की भाषा आज तक नहीं बनी हैं।

हम कई मामलों में अपने पड़ोसी देश चीन से प्रतिस्पर्धा में हैं, लेकिन भाषा के मामले में हम दूर-दूर तक उसके साथ प्रतिस्पर्धा के करीब नहीं दिखते हैं। चीन देश के विकास में वहाँ की चीनी भाषा एक अहम भूमिका अदा करती हैं, जो हमारी हिन्दी भाषा में भी होनी चाहिए। चीन में सारे सरकारी कामकाज चीनी भाषा में किये जाते हैं। क्या जर्मनी, चीनी, रुसी, पुर्तगाली अपनी भाषा में ही शिक्षा नहीं दे रहे तो फिर इस देश में ही अंग्रेजी का दखल इस स्तर तक क्यों? एक विकल्प भाषा के रुप में अंग्रेजी सीखने में कोई बुराई नहीं, लेकिन इसकी अति से एक सांस्कृतिक भाषाई शैक्षिक संकट उत्पन्न हो रहा है।

दरअसल, हमारे देश की शिक्षा प्रणाली दिनों-दिन हिन्दी भाषा से दूर होती चली जा रही हैं। हिन्दी भाषा का पठन-पाठन केवल विषय के रुप में किया जाने लगा हैं, अध्ययन का माध्यम अंग्रेजी हो चला हैं। लगभग सभी तकनीकी से संबन्धित पुस्तके जो अधिकतर विदेशी होती हैं, वे अंग्रेजी में ही होती हैं तथा इनके हिन्दी भाषा में आज तक अनुवाद तक नहीं हो सके हैं।

लेकिन हर व्यक्ति जो हिन्दी भाषी है, वह निश्चित रुप से यह समझना है कि अगर तकनीकी अपनी भाषा में हो तो उसे समझना अधिक आसान हो जायेगा।

आज एक व्यक्ति किसी भी मंच पर जब अंग्रेजी में भाषण देता है, तो हम लोग उसे कुछ ज्यादा ही विद्वान समझते हैं, लेकिन हिन्दी में बोलने वाले वक्ता को कोई तवज्जों नहीं देते, जिसका वह हकदार होता हैं, भले ही वह अंग्रेजी वक्ता से ज्यादा विद्वान हो। एक तरफ जहाँ हम अपनी सरकारो को हिन्दी भाषा की दयनीय दशा के लिये जिम्मेदार समझते है, वहीं हम नागरिक भी कम जिम्मेदार नहीं हैं। हमारा यह परम कर्तव्य है कि हिन्दी के महत्त्व को समझें और अपनी आने वाले पीढ़ी को हिन्दी का महत्त्व समझाएं और उसे हिन्दी के ज्ञान से पूरी तरह से सुसज्जित करे, जिससे देश का विकाश सुनिश्चित किया जा सके।

हिन्दी बुद्धिजीवियो को क्या यह स्वीकार होगा कि जिस अंग्रेजी के जानने वाले इस देश में अब भी पांच प्रतिशत से ज्यादा नहीं है, तो क्या सारी अक्ल इन्ही के पास है, इस पैमाने पर यह बात किसी तर्क से स्वीकार नहीं की जा सकती कि प्रतिभा सिर्फ अंग्रेजी जानने वालों के पास होती है। इस तर्क से तो हम न सिर्फ भारतीय भाषाओं की 95% प्रतिशत जनता को बेवकूफ मानेंगे, बल्कि अंग्रेजी ना जानने वाले यूरोप, चीन, रुस समेत बाकी दुनिया को भी। जब भारत जैसे तीसरी दुनिया के गरीब देश में शिक्षा का समान अर्थ ही अग्रेजी भाषा माना जाता हो, तो वहाँ धीरे-धीरे हिन्दी समेत अन्य भारतीय भाषाओं का विकास कम या फिर बंद होगी ही। हमारे देश में अधिकतर प्रदेशों में विज्ञान, इतिहास,कला व अर्थशास्त्र विषयों के साथ हाईस्कूल व इंटरमीडियेट कर रहे अधिकतर बच्चे हिन्दी समेत भारतीय भाषाओं में शिक्षा ग्रहण करते हैं। पूर्व में पिछली शताब्दी के अंतिम तीन

दशकों (1980-2000)के दौरान उत्तर भारत से आने छात्रों को इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त करने के लिये काफी मुश्किलों का सामना करना पढ़ा था। इंटरमीडियेट व हाईस्कूल में प्राप्त अंको के आधार पर व स्टेट लेवल की परीक्षा पास करने के बाद मेरिट के आधार पर उनको दूर दक्षिण भारत व महाराष्ट्र के इंजीन्यरिंग कॉलेजों में (जिनमें से कुछ कॉलेज प्राइवेट व कुछ कॉलेज सरकार से कुछ अनुदान प्राप्त थे) इंजीन्यरिंग की सीट उपलब्ध हो पाती थी, क्योकि उस दौरान उत्तर भारत में इंजीन्यरिंग कॉलेज बहुत कम थे। 1990 में मण्डल कमिशन के लागू होने से, अंतिम दशक में (1990-2000) यह दशा और खराब हो गयी। खास तोर पर 1990-94 बैच के सामान्य वर्ग के छात्रों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा।

पूर्व में लगभग इस शताब्दी से पहले तक हर किसी को तकनीकी से संबन्धित पुस्तके आसानी से भी उपलब्ध नही हो पाती थी, क्योंकि इनकी कीमतें काफी अधिक होती थी। लेकिन डिजिटल क्रांति के कारण अब इन पुस्तकों की मार्केट में कोई कमी नहीं हैं तथा इन तकनीकी से संबन्धित पुस्तकों की वर्तमान कीमते 3 दशक में लगभग 10 गुना तक कम हो गयी हैं। साथ ही साथ बहुत सारे भारतीय प्रकाशक तथा लेखक संशोधनों व नयी सामग्री के साथ ग्लोबल मार्केट में उत्तर चुके हैं। कुछ तकनीकी से संबन्धित पुस्तके डिजिटल रुप में भी उपलब्ध हो रही है, यह आज के विद्यार्थियों के लिये किसी वरदान से कम नहीं हैं।

इसी तरह से लगभग सभी तकनीकी से संबन्धित पुस्तके जो अंग्रेजी में ही होती हैं, इनके हिन्दी भाषा में अनुवाद करवा के डिजिटल रुप में भी उपलब्ध करवाया जा सकता हैं, ताकि अपनी मातृभाषा में भी तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने की चाह रखने वाले छात्रों को ये तकनीकी पुस्तकें उपलब्ध हो सके।

सयुंक्त राष्ट्र की भाषा सूची में हिन्दी को शामिल करने की माँग तो समय-समय पर की जाती हैं लेकिन अपने देश में उच्च स्तर पर विज्ञान, इंजीन्यरिंग, मेडिकल, मानविकी व अर्थशास्त्र विषयों के अध्ययन में हिन्दी को महत्त्व दिया जाए, इसकी कोई मजबूत व्यवस्था नहीं की जाती।

मौजूदा परिस्थितियों को देखते हुए हमको भाषा के स्तर पर दोहरी लड़ाई लड़ने के लिये तैयार रहना चाहिए। पहली लड़ाई स्कूली शिक्षा के स्तर पर वर्तमान सरकारी ढांचे में अंग्रेजी शिक्षा को प्रभावी बनाने की। श्रव्य और दृश्य-श्रव्य उपकरणों के माध्यम से अंग्रेजी व अन्य भाषा सिखाने के लिये पहल की जानी चाहिए। इसके लिये स्कूलों को ये उपकरण उपलब्ध कराये जाये और अंग्रेजी के अध्यापको को इनके उपयोग के लिये प्रशिक्षित किया जाए। दूसरी लड़ाई उच्च और व्यवस्था के भीतर रणनीतिपूर्वक मातृभाषा को वास्तविक महत्त्व दिलाने की होनी चाहिए। मातृभाषा से यहाँ आशय प्रथमिक रुप से हिन्दी और भाषाओं से हैं। हमे इस पर गंभीरता से सोचना होगा।

-संजीव कुमार अग्रवाल

प्रकृति एवं मनुष्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है

साभार अखंड ज्ञान पत्रिका

तस्माद्वा एतस्मादात्मनः, आकाशः संभूतः आकाशद्वायु वायोरग्निः।
अग्नेरापः अद्भ्यः पृथ्वीः औषधयः औषधीभ्योऽन्नम् अन्नत्पुरुषः

अर्थः निराकार परमात्मा से आकाश की उत्पत्ति हुई। आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी, पृथ्वी से औषधियां अर्थात वनस्पतियां, वनस्पतियों से अन्न और अन्न से मनुष्य की उत्पत्ति हुई है।

विज्ञान एवं हमारे शास्त्र सृष्टि की रचना के विषय में एकमत से स्वीकार करते हैं कि सूक्ष्म से सूक्ष्मतर, महत से महत्तर, अनादि, अनंत, अनिर्वचनीय, निर्गुण, अपने निराकर स्वरुप से परमात्मा ने इन विविध गुणों से युक्त सृष्टि की रचना की है। जिस प्रकार मकड़ी अपने ही शरीर से निकाले हुई पदार्थ से जाला बुनकर उसी में रहती है। उसी प्रकार परमात्मा ने सबसे पहले अपने शरीर से आकाश की रचना की, जिसका एक ही गुण है- शब्द। उस आकाश में स्पंदन होने से वायु की उत्पत्ति हुई, जो शब्द और स्पर्श इन दो गुणों से युक्त है। वायु में घर्षण होने से अग्नि की उत्पत्ति हुई, जो शब्द, स्पर्श और रूप इन तीनों गुणों से युक्त है। फिर इन तीनों के योग से शब्द, स्पर्श, रूप एवं रस इन चार गुणों वाले जल की रचना हुई। फिर इन्हीं तत्वों को मिलाकर पृथ्वी की रचना हुई जो शब्द, स्पर्श, रस एवं गंध इन पांच गुणों से युक्त है। फिर इन्हीं पांच तत्वों के विविध अनुपात में योग एवं संयोग से विश्व की समस्त वस्तुओं एवं मुनष्य का निर्माण हुआ। हमारा शरीर भी इन्हीं पांच तत्वों से बना है। इस तरह निर्गुण-निराकार परमात्मा से विविध रूप-रंग और गुणों वाली सृष्टि का निर्माण हुआ।

इस तरह यह पांच दिव्य तत्व परमात्मा के अंग व अंश हैं और उसी निराकार की स्वररूपवान अभिव्यक्ति हैं। ये पांच दैवीय तत्व संसार की समस्त रचनाओं और जीवन का आधार एवं मूल तत्व हैं। ये हमारी पांचों ज्ञानेंद्रियों की तन्मात्राएं हैं और जीवनदायी महान शक्तियां भी हैं। अतः इन्हें पंचमहाभूत कहा जाता है। इसीलिए हमारे शास्त्रों में इनको देवता भी कहा गया है। वायु देवता, वरुण देवता, सूर्य देवता, इंद्र देवता और पृथ्वी देवी सर्वप्रसिद्ध हैं, और इन सबकी पूजा की जाती है। इन पंचमहाभूतों के समन्वित व संतुलित समावेश से ही जीवन का प्रादुर्भाव संभव होता है। ब्रह्मांड में जिस ग्रह पर पांचों तत्व उपलब्ध है, वहीं जीवन का अस्तित्व है। ये प्रत्येक तत्व महान शक्तियों और ऊर्जा के प्रचंड स्त्रोत हैं। इन पांचों महान ऊर्जा-स्त्रोतों से ही ऊर्जा प्राप्त कर संसार की सभी वस्तुएं रूप, रस, गंध से युक्त होकर पोषणकारी बनती हैं और उनसे जो शक्ति प्राप्त होती है, वह वास्तव में इन्हीं पांचों तत्वों की ही शक्ति होती है। विभिन्न पेड़-पौधों में जो फल-फूल, सब्जियां, अन्न और उनमें

पाए जाने वाले स्वाद, सुगंध एवं पोषक तत्व हैं एवं उनसे उत्पन्न जड़ी-बूटियों में जो औषधीय गुण हैं, वे भी इन्हीं पांचों तत्वों के कारण है। अत: ये पंचमहाभूत ऊर्जा के मूल स्त्रोत हैं जबकि बाकी सभी स्त्रोत गौण हैं। अत: जहां अन्य चिकित्सा पद्धतियों में किसी दवा-दारू या जड़ी-बूटियों से इलाज किया जाता है, वहीं प्राकृतिक चिकित्सा में ऊर्जा के इन मूल स्त्रोतों की शक्ति द्वारा ही सारे इलाज किए जाते हैं। अन्न या जड़ी-बूटियों के सेवन करने पर जो शक्ति प्राप्त होती। वह भी इन पंचमहाभूतियों के कारण ही होती है। वही शक्ति इन पंचमहाभूतियों के प्रत्यक्ष सर्म्पक या सेवन से प्राप्त हो सकती है।

ये हमारे जीवन की अति महत्वपूर्ण मौलिक आवश्यकताएं हैं। पांच तत्वों से निर्मित शरीर में आकाश तत्व हमारे दो

कोषों के बीच में वायु की प्रधानता फेफड़ों में, अग्नि की प्रधानता हमारे स्नायु संस्थान एंव पाचन संस्थान में होती हैं। रक्त में जल तत्व की एंव हड्डियों में पृथ्वी तत्व की प्रधानता होती है। शरीर में इन पांच तत्वों का उचित संतुलन होने पर ही हमारा शरीर स्वस्थ रहता है। इनका उचित संतुलन बनाए रखने के लिए ये पांचों तत्व हमारे शरीर को प्रतिदिन उचित मात्रा में मिलते रहने चाहिए। इनके न मिलने पर शरीर रोगी होकर मुरझा जाता है। रोग होने की अवस्था में इन तत्वों के प्राप्त होने से वह पुन: स्वस्थ, सबल और सुदृढ़ हो जाता है। ठीक उसी प्रकार, जैसे कमरे में बंद मुरझाया पौधा बरसात की फुहार, सूर्य की किरणों एवं ताज़ी हवा के मिलने पर लहलहा उठता है।

संसार के सभी प्राणी इस प्रकृति से जुड़े हैं। इससे शक्ति प्राप्त कर वे सदैव स्वस्थ, सबल एवं निरोगी कहते हैं। रोगी हो जाने पर हमें पंचतत्वों द्वारा निर्मित इस शरीर को इन्हीं दिव्य तत्वों की शक्ति द्वारा मरम्मत कर अपने को निरोगी कर लेना चाहिए क्योंकि जो वस्तु जिस पदार्थ से बनी है उसी से उसकी मरम्मत की जा सकती है, जैसे कपड़े की मरम्मत धागे से ही हो सकती है। जो इन पांच दिव्य तत्वों से निर्मित है, वही सजीव, अमृत प्राकृतिक और ऑर्ग्रेनिक है, ऊर्जा एवं शक्ति से भरपूर है और हमारे शरीर के उपयोग करने योग्य है। मनुष्य द्वारा निर्मित एवं निस्सार हैं। वे हमारे शरीर में आत्मसात नहीं हो पातीं क्योंकि हमारे शरीर के लिए वे विजातीय पदार्थ हैं। शरीर में आत्मसात नहीं होने के कारण वे शरीर में पड़े सड़ते रहते हैं तथा आवश्यक कार्यों में रुकावट डालते हैं। प्रचलन में आने वाली सभी अप्राकृतिक औषधियां, कृत्रिम ताक़त की गोलियां, मल्टी विटामिन की गोलियां, नमक में डाला हुआ निर्जीव आयोडीन, तरह-तरह के रसायन जो प्रीज़र्वेटिव के रुप में अनेकों भोजनों में, डिब्बाबंद बोतलों एवं पैकेटों में प्रयोग किए जाते हैं- ये सभी शरीर में विषाक्तता तो लाते ही हैं, साथ ही साथ शरीर में विजातीय द्रव्य बनकर अनेक तरह की कमियां (Deficiency) पैदा कर शरीर में अनेकों रोग भी पैदा कर देते हैं। आजकल ऐसे आहार का प्रचलन ख़ूब बढ़ जाने से अनेकों ख़तरनाक, असाध्य एवं नई बीमारियां पैदा हो रही हैं।

यह प्रकृति जीवनदायी एवं स्वास्थ्यदायी महाशक्तियों का अनंत व अजस्त्र स्त्रोत या एक बड़ा पावर हाउस है। हमारे घरों में अनेकों बिजली के उपकरण बिजली के स्त्रोत से शक्ति ग्रहण का उसी से चलते हैं। पावर हाउस से सम्बन्ध समाप्त होते ही सब कुछ ठप्प हो जाता है। ठीक उसी प्रकार, हमारे शरीर के सभी अवयव केवल तभी उत्तम रूप से काम कर पाते हैं, जब हम पंचमहाभूतमय प्रकृति से जुड़े रहें और मां प्रकृति से जुड़े रहें और मां प्रकृति के उस विशाल ऊर्जा स्त्रोत से ऊर्जा ग्रहण करते रहें। ठीक वैसे ही, जैसे गर्भस्थ शिशु अपनी मां से सारी ऊर्जा ग्रहण करता है। अत: हमारे जीवन में उपयोग में आने वाली हर वस्तु प्राकृतिक ही होनी चाहिए। हम केवल प्राकृतिक

वस्तुओं का ही प्रयोग करें। जीवन और शक्ति के इन पांच महान स्त्रोतों को सदा निर्मल और पवित्र रखें एवं उनसे शक्ति ग्रहण करते रहें।

पंचतत्वों से निर्मित हमारा एक दिखने वाला स्थूल शरीर है। इसके अलावा हमारा एक दिखने वाला सूक्ष्म शरीर भी है, जो मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार आदि से बना है। ये सभी आत्मा की सत्ता से चलते हैं। जिस तरह हमारे घरों में मिक्सी आदि बिजली के उपकरण होते हैं, जिसमें एक ऊपरी ढांचा होता है, उसके अंदर एक मोटर होती है, जो तारों द्वारा जुड़ी रहती है और बिजली से चलती है। ठीक उसी प्रकार हमारा स्थूल शरीर ऊपरी ढांचे की तरह, सूक्ष्म शरीर मोटर की तरह और आत्मा बिजली की तरह होती है। स्थूल और सूक्ष्म शरीर सांस की तार से जुड़े रहते हैं। स्थूल शरीर के पुराने और जर्जर हो जाने पर सांसे बंद हो जाती हैं। प्राणों का संचार समाप्त हो जाता है तो हमारी मृत्यु हो जाती है, स्थूल शरीर के पंचतत्व प्रकृति के पंचतत्वों में पुन: विलीन हो जाते हैं और सूक्ष्म शरीर नया शरीर धारण कर लेता है। स्थूल शरीर तो एक शव का भी होता है। उसके अदंर शिव तत्व (मन, बुद्धि, प्राण एवं आत्मा) के योग के कारण ही जीवन संभव होता है। शिव तत्व से वियोग होते ही मनुष्य शव हो जाता है। हम पूर्णतया स्वस्थ तभी कहलाएंगे जब हम शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रुप से पूर्णत: स्वस्थ होंगे।

आत्म: इन्दिगय: मन: स्वस्थ:।
स्वस्थ इति अवधीयते॥

(चरक संहिता)

(जिसकी आत्मा, मन एवं इंद्रियां स्वस्थ हों, वही वास्तव में स्वस्थ है।)शरीर, मन और आत्मा का अति घनिष्ठ और गहरा सम्बन्ध है। हम प्राय: शरीर की उपयोगिता और कार्य के बारे में चर्चा करते हैं। आधुनिक पश्चिमी चिकित्सा भी केवल इसी शरीर का ही इलाज करती है। मन के बारे में कुछ भी कहना हम भूल जाते हैं। स्मरण रहे, तन से मन का महत्व बहुत अधिक है। हम सब जानते हैं कि विचार पहले मन में आता है, फिर शरीर उसे कार्यान्वित करता है। मन की स्थिति के अनुसार शरीर में भी परिवर्तन आ जाते हैं और शरीर की स्थिति के अनुसार मन बन जाता है। हाथ-पैर में चोट आ जाए, कट जाए या कोई शारीरिक बीमारी या शरीरिक कष्ट होने पर मन भी घबराकर अस्थि व विचलित हो जाता है और दुखद समाचार सुनने पर मन में आवेग आने के साथ-साथ दिल का जोरों से धड़कना, चक्कर आना, आंसू, आना आदि शरीरिक लक्षण प्रकट होने लगते हैं। तनाव, क्रोध, चिंता, ईर्ष्या, द्वेष, भय मानसिक उद्वेग की स्थिर में हमारी अन्त:स्त्रावी ग्रंथियां अनेक विषाक्त रसायन उत्पन्न करती हैं, जिससे शरीर की समस्त क्रियाएं अस्त-व्यस्त हो जाती है और अनेक शारीरिक रोग उत्पन्न होने लगते है। प्रेम, प्रसन्नता, करुणा, उदारता, सहानुभूति आदि सकारात्मक विचारों या भावनाओं से भरपूर मनोस्थिति में अन्त:स्त्रावी ग्रंथियां ऐसे स्त्राव उत्पन्न करती हैं, जिससे रोगों से लड़ने की जीवन शक्ति बढ़ती है और समस्त शारीरिक क्रियाएं सुचारू रूप से कार्य करने लगती है।

इसलिए जीवन तथा स्वास्थ्य को हर प्रकार से संतुलित एवं पूर्ण बनाने की दृष्टि से शारीरिक और मानसिक अनुरूपता का होना अनिवार्य है। अक्सर देखा जाता है, बुद्धिजीवी अपने शारीरिक स्वास्थ्य की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देते और शरीर को गठीला एवं ह्यष्ट-पुष्ट बनाने वाले पहलवान बुद्धि के विकास की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देते। दोनों को ही पूर्णतया स्वस्थ नहीं कहा जा सकता। इसलिए स्वस्थ और अस्वस्थ दोनों ही अवस्थाओं में तन और मन दोनों की ही अनुरूपता का ख़ास ख़्याल रखना चाहिए अन्यथा वह एकांगी कहलाएगी। शरीर के पोषण के साथ मानसिक पोषण का भी ध्यान रखना चाहिए। शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रुप से स्वस्थ होना ही पूर्ण स्वास्थ्य कहलाएगा। अत: मां प्रकृति से जुड़कर रहिए। अपने खानपान, रहन-सहन, आहार-विहार एवं विचार को प्राकृतिक बना लीजिए, तो रोग जैसी अप्राकृतिक अवस्था कभी उत्पन्न नहीं होगी। अत: रोगी होने पर अपने खोए स्वास्थ्य को बड़े-बड़े अस्पतालों के बंद कमरों में न ढूंढ़े। वह डॉक्टरों, बाज़ारों या दवा की शीशियों में नहीं मिलेगा। स्वास्थ्य कोई बोतल में बंद

बाज़ार में बिकने वाली वस्तु नहीं है, जो ख़रीदी या बेची जा सके। अगर ऐसा होता तो सारे अमीरों के पास स्वास्थ्य का ख़ज़ाना होता और डॉक्टर कभी बीमार ही नहीं पड़ते। स्वास्थ्य को ढूंढ़िए मां प्रकृति की शरण में ही जाइए। प्रकृति ने चारों ओर स्वास्थ्य का धन लुटाया है। उसने जो चारों ओर हवा ही हवा बहाई है, इस हवा के समुद्र में ही हम रहते है, यह केवल हवा नहीं, प्राण का समुद्र है। शक्ति का, ऊर्जा का समुद्र है। इसी प्राण के कारण ही हम जीवित हैं। यही प्राण सांसों द्वारा शरीर में प्रवेश कर रोम-रोम में प्राण और जीवन का संचार करता है। प्रकृति के इस ख़जाने से थोड़ा धन आप भी ले लीजिए। किसी प्राकृतिक स्थान पर जाकर गहरी सांसों का अभ्यास कीजिए। वायु स्नान कर अपने अंदर शक्ति और ऊर्जा का अनंत भंडार भर लीजिए। प्रकृति का दूसरा ख़जाना है - शक्ति की प्रतीत सूर्य की किरणें, जिन्हें प्रकृति ने चारों ओर मुफ़्त में ही बिखेरा है। कुछ समय सूर्य स्नान कीजिए और अपने अंदर ऊर्जा भर लीजिए। तीसरा ख़ज़ाना है, जल। प्रकृति ने जल प्रदान करने में भी कोई कंजूसी नहीं की है। चारों ओर संमुद्र, नदियां, झरने, तालाब भरे हैं, कमी होते ही चारों ओर से चौधार बरसा देती है मां प्रकृति जल। यह ही जीवन है। जल स्नान द्वारा शरीर के अन्त:बाह्य को शक्ति से आप्लावित कर लीजिए।

चौथा ख़ज़ाना है - आकाश। जाइए खुले आकाश में, सूर्य के प्रकाश में, चंद्रमा की शीतल छांव में, तारों भरे गगन के नीचे आकाश स्नान कर भर लीजिए अपने अन्दर आकाशीय ऊर्जा। पांचवा खजाना है, मिट्टी। इसी से आप बने हैं और अंत में इसी में जायेंगे। यही अन्नपूर्णा मां वसुंधरा, इस मिट्टी से पूरे संसार का भरण-पोषण करती है। भोजन को सभी अमृत तत्वों से भर देती है, स्वाद और सुगंध से भर देती है, पौष्टिकता से भर देती है। तुच्छ सी जान पड़ने वाली यह मिट्टी महान ऊर्जा का स्त्रोत है। इससे भी प्राप्त कीजिए। अपने शरीर से इसका भी सीधा स्पर्श होने दें। जीवनी शक्ति के अक्षय भंडार, इन पंचमहाभूतों को यथासंभव स्वच्छ व पवित्र रखना चाहिए। इन्हें प्रदूषित कर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी नहीं मारनी चाहिए। ये हवा, मिट्टी, पानी आदि तत्व कीटाणुओं से नहीं, जीवन और आरोग्य से भरे है। इन्हीं दिव्य तत्वों द्वारा निर्मित ऊर्जा, प्राण एवं अमृत से भरपूर प्राकृतिक भोजन द्वारा अपने अंदर संजीवनी शक्तियां भर लीजीए। प्रकृति के इस पंचमहाभूत निर्मित पुतले को इन्हीं प्राकृतिक शक्तियों से भरिए। इसमें दवाओं का ज़हर मत घोलिए। प्रकृति के इस राजपथ के पथिक को कभी भी रोग या डॉक्टरों, अस्पतालों के दर्शन नहीं हो सकते। उसे केवल आरोग्य, आनंद और अमरत्व प्राप्त होगा।

"The language of Nature can be learnt neither in hot classrooms nor from the corpse in the disecting room, nor from the tortured animals in the laboratory neither from the sufferers in the hospitals. Nature alone can leach us."

Prof. Gustav Jaeger

"कुदरती इलाज हमें ईश्वर के ज्यादा नजदीक ले जाता है। उपवास से हम क्यों डरे, शुद्ध हवा से हम क्यों बचें? कुदरती इलाज का मतलब है- कुदरत या ईश्वर के ज्यादा नजदीक जाना।"

-बापू

"औषधि विज्ञान का जन्म मनुष्य के प्राकृतिक जीवन के पतन के साथ हुआ और ज्यों-ज्यों मनुष्य ने अप्राकृतिक जीवन को अपनाया, इस विज्ञान की उन्नति हुई और अप्राकृतिक जीवन क अतं के साथ-साथ इस विज्ञान का अंत होना भी निश्चित है। इतिहास में बताया है कि अनेक प्रकार के दूषण सदियों तक प्रचलित रहे है और फिर मिटे हैं। जादूगरी को मिटते तो स्वयं विज्ञान ने देखा है।"

-एडॉल्फ़ जस्ट

अभिप्रेरणा

हम जो भी काम करते है, उसकी कोई वजह होती है और उस दिशा में प्रभावशाली ढंग से काम करने के लिए हमें शक्ति चाहिए और यह शक्ति हमें अभिप्रेरणा से मिलती है जिसे साधारण भाषा में प्रेरणा या मॉटीवेशन कहते हैं।

बिना लक्ष्य के काम करना बिल्कुल वैसा ही जैसा बिना गंतव्य के गाड़ी चलाना। व्यक्ति स्वयं के लिए लक्ष्यों का निर्धारण करते हुए स्वप्रेरणा ले सकता है। यदि कोई विद्यार्थी अपनी कक्षा में प्रथम आने की कामना करता है तो यह प्रेरणा उसे अपने लक्ष्य को प्रभावशाली ढंग से प्राप्त करने में मदद करती है। इसी प्रकार, कर्मचारियों को भी कार्यालय में काम लिए प्रेरणा शक्ति की आवश्यकता होती है।

कार्य अभिप्रेरणा और इसका महत्व:

किसी भी संगठन की सफलता में प्रमुख योगदान वहां के कर्मचारियों का ही रहता है। इसीलिए अभिप्रेरणा को मानव संसाधन विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू माना जाता है। कर्मचारियों को जितना अधिक अभिप्रेरित किया जाएगा, वे अपने संगठन की सफलता में उतना ही अधिक योगदान देंगे।

कार्य अभिप्रेरणा अपने कार्य को बेहतरीन ढंग से करने की लोगों की इच्छा, नीयत और वांछनीयता को परिभाषित करती है। इसे सरल शब्दों में समझें तो जो लोग आर्थिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर संतुष्ट रहते हैं, वे ज्यादा प्रभावशाली ढंग से काम करते हैं। कर्मचारी अपने संगठन से क्या प्रत्याशा रखते हैं, वो कर्मचारियों के अभिप्रेरण स्तर के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

प्रत्येक संगठन को अपने कार्य निर्धारित समय के भीतर पूरे करने होते हैं। आज की बढ़ती प्रतिस्पर्धा में किसी भी संगठन द्वारा समय सीमा को लेकर बढ़ती गई थोड़ी सी शिथिलता भी उसके विकास में घातक सिद्ध हो सकती है। यही वजह है कि प्रत्येक संगठन के मा.सं.वि. विभाग को भलीभांति समझ लेना चाहिए कि कर्मचारियों को समय समय पर प्रेरित करते रहना उसके लिए बहुत ज़रूरी है।

एक परियोजना प्रबंधक अपनी टीम को किस प्रकार अभिप्रेरित करे, उस संबंध में अभिप्रेरण के कई ऐसे सिद्धांत हैं जिन पर गौर किया जा सकता है:

क. मैस्लो का हाइयार्की ऑफ नीड्स (पदानुक्रम की आवश्यकता) सिद्धांत:

1943 में अब्राहम मैस्लो ने इस सिद्धांत को विकसित किया था। यह सिद्धांत मनुष्य की पांच प्रमुख जरूरतों पर आधारित है जो उसे अभिप्रेरित करती हैं

मैस्लो के अनुसार व्यक्ति अपने अगले स्तर पर तब तक आरोहण नहीं कर सकता है जब तक कि उसके वर्तमान स्तर की आवश्यकताएं न पूरी हों।

निम्न स्तर से उच्च स्तर तक की मैस्लो की हाइयार्की आफ नीड्स को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है:

▸ **मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं :** परियोजना प्रबंधक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनकी टीम के सदस्यों की भोजन, आवास, कपड़ा इत्यादि के संबंध में मूलभूत आवश्यकताएं पूरी हो रही हैं ताकि टीम के सदस्य अपने काम पर ध्यान दे सकें।

▸ सुरक्षा संबंधी आवश्यकताएं: इसके अंतर्गत कार्यस्थल पर कर्मचारियों को मिलने वाली सुरक्षा को लिया जा सकता है। मसलन, कर्मचारियों को अपने कार्यस्थल पर हिंसा, यौन उत्पीड़न या अन्य किसी भी प्रकार का खतरा न हो और संगठन की नीतियां व नियम कर्मचारी हितैषी हों।

▸ **सामाजिक आवश्यकताएं:** परियोजना प्रबंधक को अपने कर्मचारियों के बीच एक मित्रवत और प्रतिस्पर्धात्मक

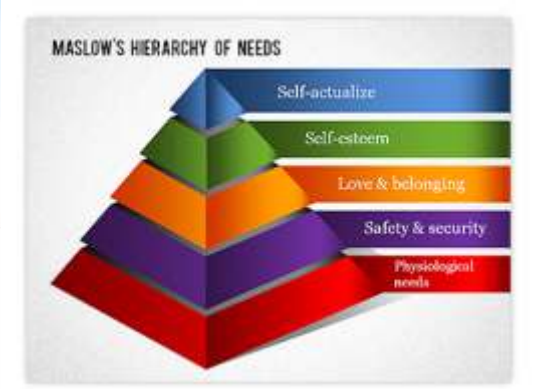

Self-Fulfillment,Growth, Learning, Development of own potential

Accomplishment, Respect, Attention &Appreciation

Love, Affection, Approval, Friends, Association and Social Status

Proper Job Safety and Securityat workplace, Friendly rules & policies, no fear of violence

Food, Shelter, Air, Water, Clothing

व्यवहार को बढ़ावा देना चाहिए। उसे समय-समय पर अपने दल के लिए पार्टी और पिकनिक आदि का भी आयोजन करना चाहिए।

▸ मान्यता/स्वाभिमान संबंधी आवश्यकताएं: परियोजना प्रबंधक को अपने प्रत्येक साथी को यह एहसास दिलाना चाहिए कि वह पूरी टीम के लिए बहुत महत्व रखता है। वित्तीय लाभ के साथ-साथ उसे अपनी टीम के हर कर्मचारी की खूबियों को सभी के सामने बताने से कभी हिचकिचाना नहीं चाहिए।

▸ स्व-निर्धारण संबंधी आवश्यकताएं: टीम के जो सदस्य अपने लिए ऊंचे लक्ष्य निर्धारित करते हैं, परियोजना प्रबंधक को उन पर विशेष ध्यान देते हुए उनकी हरसंभव सहायता करनी चाहिए।

A. हर्जबर्ग का अभिप्रेरण एवं स्वच्छता संबंधी सिद्धांत

यह सिद्धांत दो तथ्यों पर आधारित है:

1) मूल कारक

2) अभिप्रेरण कारक

मूल कारक: यह वो कारक है जो कार्य करने के वातावरण को प्रभावित करता है और इसके कारण असंतुष्टि का भाव नहीं बनता है। और मूल कारक है कर्मचारी का वेतन। जाहिर सी बात है कर्मचारी को यदि अपनी योग्यता और क्षमता के अनुकूल पर्याप्त वेतन मिलता है तो वह प्रसन्नचित्त और संतुष्ट रहेगा और उसकी कार्यक्षमता में सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

इस कारक के निम्नलिखित पहलु भी हैं:

- प्रशासनिक नीतियां
- कार्य परिस्थितियां
- वेतन
- निजी जीवन
- सामाजिक रुतबा

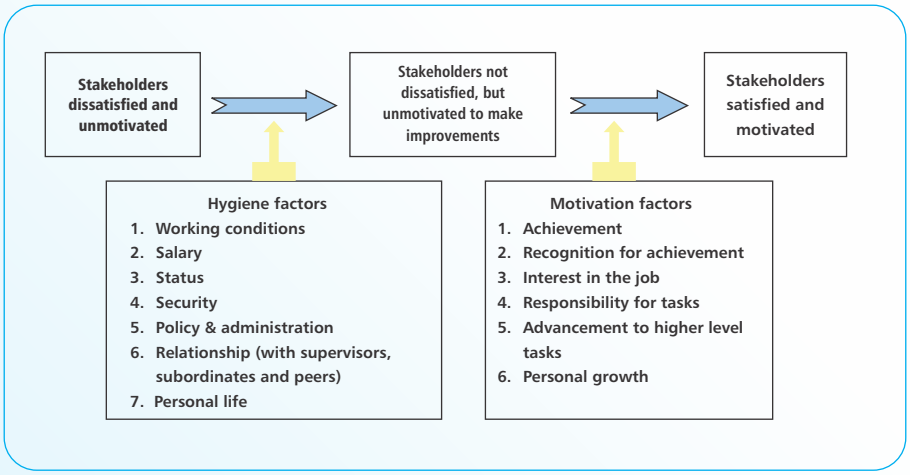

- सहकर्मियों, वरिष्ठ और कनिष्ठ, के साथ संबंध
- सुरक्षा
- पर्यवेक्षण की राशि

उक्त कारक पर ध्यान न देने से अभिप्रेरण का सारा महत्व बर्बाद हो जाता है।

अभिप्रेरण कारक: यह वास्तविक कार्य से संबंधित है और लोगों को निरंतर प्रेरित करता रहता है। इस कारक के अंतर्गत निम्नलिखित पहलू शमिल हैं

- कार्य सामग्री
- स्व-निर्धारण
- व्यवसायिक विकास
- उत्तरदायित्व
- मान्यता

B. प्रत्याशा का सिद्धांत:

ऐसे कर्मचारियों पर विशेष ध्यान दो जिन्हें

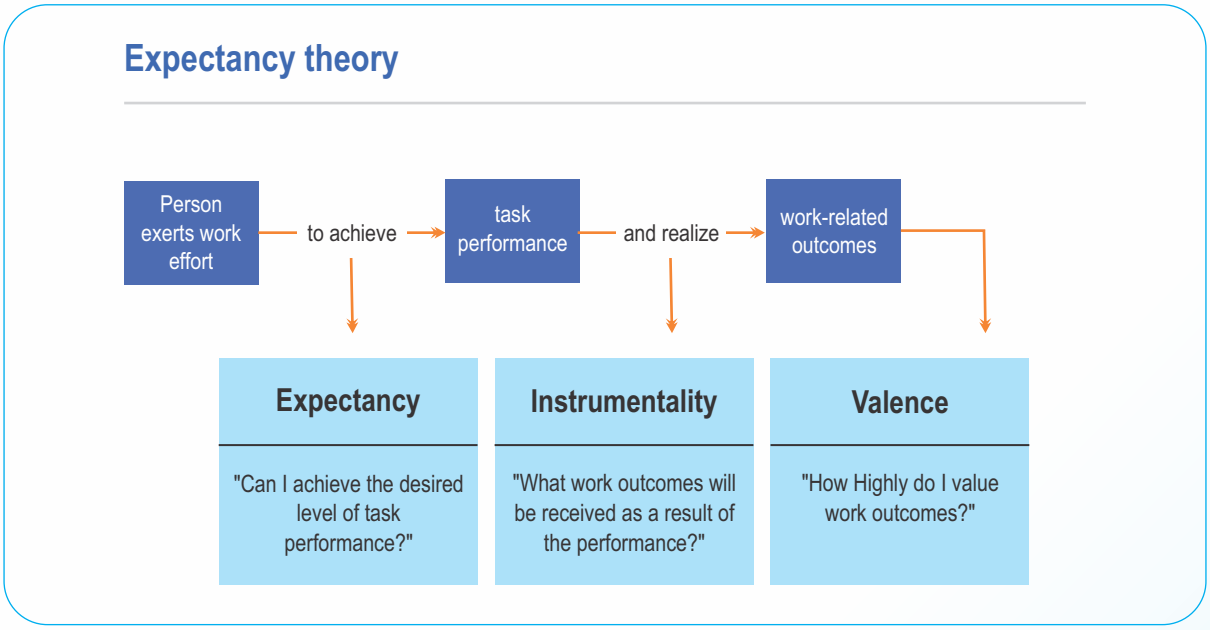

यह लगता है कि वे अपने प्रयासों के बल पर संगठन के लिए बेहतर और प्रभावशाली परिणाम लाकर दे सकते हैं।

एक कर्मचारी के लिए सिद्धांत तभी कारगर सिद्ध हो सकता है जब उसके प्रयास, कार्यनिष्पादन और अभिप्रेरण एक दूसरे से जुड़े हों। यहां तीन महत्वपूर्ण तथ्य गौर करने लायक हैं।

1) संयोजकता- लोगों के कार्यों को पहचान देने से बेहतर परिणाम सामने आते हैं

2) प्रत्याशा- यह विश्वास रखना कि अधिक प्रयासों से कार्यनिष्पादन में वृद्धि होती है

3) साधन - संगठन का सबसे बड़ा औज़ार उसके कर्मचारी है, जो हर हाल में संतुष्ट होने चाहिए

प्रत्येक कर्मचारी अपने कार्यों के लिए पुरस्कार की प्रत्याशा करता है और यही उसकी अभिप्रेरण शक्ति का काम करते हैं। कर्मचारी की प्रत्याशाएं पूरी होने का प्रतिशत जितना अधिक होगा उसके कार्य करने की क्षमता में उसी अनुपात में वृद्धि होगी। इसे नीचे दिए गए प्रत्याशा सिद्धांत के रेखाचित्र से समझा जा सकता है।

C.मैक्ग्रेगर का सिद्धांत एक्स और वाय:

इस सिद्धांत के अनुसार अधिकांश कर्मियों को दो श्रेणियों में रखा जा सकता है: एक्स और वाय। इससे पता चलता है कि प्रबंधक अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से कैसा कार्यसंबंध रखते हैं।

सिद्धांत एक्स यह कहता है कि औसत

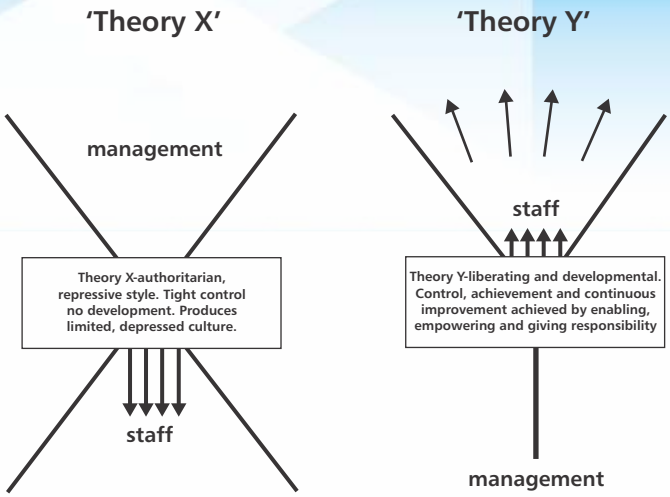

कर्मचारी प्रमुख रूप से पैसे के लिए काम करते है, वस्तुत काम करना पसंद ही नहीं करते हैं, आदतन कामचोर होते हैं, जिम्मेदारियों से बचते हैं, सहयोग की मांग करते रहते हैं और दंड के भय से ही काम करते हैं।

यह एक प्रकार की अधिनायकवादी शैली है जिसमें बहुत से कड़े नियम बनाए जाते हैं और प्रबंधक उनके सख्त अनुपालन को सुनिश्चित करता है।

सिद्धांत वाय के अनुसार कर्मचारी अपने काम के प्रति समर्पित होते हैं, रचनात्मक होतें है, अपने काम में आज़ादी चाहते हैं, जिम्मेदारी उठाने के लिए तैयार रहते हैं, निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदार बनते हैं और स्वयं को निरंतर बेहतर काम करने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

प्रबंधन इस प्रकार के सिद्धांत को भागीदारी शैली के रूप में स्वीकार करता है और अपने कर्मचारियों को अधिक से अधिक दायित्व और स्वतंत्रता देते हुए बेहतर कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

D. सिद्धांत जेड:

इस सिद्धांत में प्रबंधन अपने कर्मियों पर उच्च स्तरीय विश्वास रखता है, उन्हें अभिप्रेरित करता है और संगठन की सफलता में उनके योगदान को समान रूप से मान्यता देता है।

E. मैक्लेलैंड का उपलब्धि सिद्धांत:

यह सिद्धांत यह कहता कि लोगों को अभिप्रेरित करने के लिए उन्हें शक्ति, उपलब्धि और सौहार्दपूर्ण वातावरण प्रदान करने की आवश्यकता होती है।

उपर्युक्त सिद्धांतों का यदि संगठनों द्वारा अनुसरण किया जाता है तो इसके बहुत अच्छे परिणाम सामने आ सकते हैं।

सरकारी/सार्वजनिक सेक्टर में अभिप्रेरण

संगठन में लोगों को प्रेरित/अभिप्रेरित करने का बहुत महत्व है और जब हम सार्वजनिक/सरकारी सेक्टर की बात करते हैं तो संगठन के साथ-साथ परियोजना निदेशक के लिए भी यह एक बहुत बड़ी चुनौती बनकर सामने आता है। इस चुनौती से पार पाने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि प्रेरणा शक्ति के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया जाए और इसे लेकर समुचित योजनाएं बनाई जाएं।

सार्वजनिक/सरकारी सेक्टर में, असंतुष्टि के कई स्तर होते हैं:

- कार्य करने की खराब परिस्थितियां
- अनुचित वैयक्तिक नीतियां
- पर्यवेक्षण या निरीक्षण का अभाव या फिर आवश्यकता से अधिक होना
- अनुशासनहीनता
- संगठन के भीतर पारदर्शिता का अभाव
- वस्तुनिष्ठ कार्यशैली का प्रभाव
- संगठन के भीतर तटस्थता का अभाव

• स्व-प्रेरित कर्मचारियों के लिए **अवसरों का अभाव**

परियोजनाओं को एक बड़े स्तर पर सफल बनाने के लिए असंतुष्ट कर्मचारी किसी भी तरह का सकारात्मक योगदान नहीं देते हैं। परिणाम यह होता है कि जो परियोजना मुनाफा लेकर आने वाली थी, वह घाटे का सौदा साबित होती है।

उपर्युक्त के अलावा सरकारी/सार्वजनिक सेक्टर को अपने कर्मचारियों को प्रेरित करने के लिए निम्नलिखित पहलुओं पर विचार करने की आवश्यकता होती है।

1. प्रशासनिक तंत्र लक्ष्यमूलक नहीं होता है। इसलिए सरकारी/सार्वजनिक सेक्टर में एक नई कार्यनीति व कार्यसंस्कृति को विकसित करना चाहिए जो लक्ष्यों पर केंद्रित हो और उन्हें समय पर पूरा करने पर ध्यान दें।

2. प्रोत्साहनवर्धक योजनाएं या तो होती नहीं है और यदि होती हैं तो नाममात्र होती हैं। यहां पदोन्नति और वेतनवृद्धि के लिए वरिष्ठता को ही आधार बनाया जाता है। यह चलन प्रभावशाली नहीं है। बात चाहे पदोन्नति की हो या वेतनवृद्धि की, सभी का आधार कार्यनिष्पादन ही होना चाहिए। साथ ही पर्याप्त कार्य निष्पादन न किए जाने पर दंड का प्रावधान भी होना चाहिए।

3. दो ऐसे प्रमुख सक्षमता क्षेत्र हैं जिन पर परियोजना निदेशक को सामान्यतया काम करना आवश्यक होता है:

क)अपने स्टाफ का विकास -टीम के सदस्यों को ऐसे कार्य नहीं दिए जाते हैं जो उनके ज्ञान और कौशल पर आधारित हों और साथ ही उन्हें निर्णय प्रक्रिया और बड़ी जिम्मेदारियों में भागीदार नहीं बनाया जाता है। वे अपने विचार व्यक्त नहीं करते हैं और इस तरह से कार्यस्थल में नूतनता का नितांत अभाव रहता है। परिणाम प्राप्त करने के लिए कार्य, कार्य करने का अधिकार, कार्य हेतु प्रशिक्षण और संसधानों के सदुपयोग जैसे पहलुओं पर पर्याप्त ध्यान देना आवश्यक होता है और यदि इन सभी पहलुओं को समान महत्व दिया जाए तो आशातीत परिणाम प्राप्त होने की संभावना 50 से 60 प्रतिशत तक बढ़ जाती है।

ख)संचार - ऐसा देखा गया है कि टीम के सभी सदस्यों और प्रभागाध्यक्षों के बीच सूचना के प्रवाह का अभाव रहता है। वास्तव में होना तो इसके विपरीत चाहिए। क्योंकि आज के युग में जहां हमारे पास टेलीफोन, इंटरनेट आदि संचार की विभिन्न सुविधाएं हर वक्त साथ रहती हैं, ऐसे में टीम के सदस्य यदि टीम लीडर के साथ निरंतर संपर्क में न रहें तो इससे ज्यादा दुर्भाग्यवश बात और कुछ नहीं हो सकती है।

4. टीम लीडर को अपने सदस्यों से अधिक परिणाम लाकर देने का भरोसा करना चाहिए। इसके लिए ज़रूरी है कि वह उन पर विश्वास करे और उन्हें काम करने की पर्याप्त आज़ादी प्रदान करे। ऐसा देखा जाता है कि बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियां और बड़े निर्णय लेने का अधिकार केवल उच्च स्तरीय अधिकारियों के लिए ही सुरक्षित रखे जाते हैं। यह एक गलत प्रवृत्ति है।

5. यदि कर्मचारी संसाधनों, तकनीकों, कुशलता आदि कारकों की उपेक्षा करेंगे तो वे निर्धारित लक्ष्य कभी प्राप्त नहीं कर पाएंगे। हमें कभी यह नहीं भूलना चाहिए कि तकनीकों में निरंतर बदलाव आता रहता है और ऐसे में प्रशिक्षण हम सभी की आवश्यकता बन गया है।

6. संगठन के प्रमुख अधिकारियों का दृष्टिपथ अपने आप में स्पष्ट होना चाहिए, उन्हें अपने कर्मचारियों के कौशल को निरंतर विकसित करना चाहिए, उनके अच्छे कार्यों को मान्यता प्रदान करनी चाहिए और इसके लिए उन्हें पर्याप्त संसाधन प्रदान करने चाहिए।

7. कर्मचारी जोखिम लेने से डरते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि यदि उन्हें इसमें सफलता नही मिली तो उनको इसका खामियाजा भुगतान पड़ेगा। परियोजना लीडर को ऐसे में आगे आकर जिम्मेदारी लेनी चाहिए और कर्मचारियों को ऐसा जोखिम लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए और उन्हें विश्वास दिलाना चाहिए कि सफलता नहीं मिलने पर उन्हें कोई दुष्परिणाम नही भुगतान पड़ेगा।

-अमरजीत कौर

सफलता का राज =99% विफलता

उन्नति की राह संघर्षों की मांग रखती है। फिर चाहे उस पर चलने वाले व्यक्ति का सामना असफलता से कितनी ही बार क्यों न हो! वह यो (अपने आत्म-बल से नियति की हर ठोकर को परास्त कर निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहता है।

जापान के फूजी पर्वत (Mt. Fuji) के तल में स्थित है, शिज़ूओका (Shizuoka) प्रांत 17 नवम्बर, 1906 में उस प्रांत के कोम्यो (Komyo) गाँव मे एक बालक का जन्म हुआ। बचपन से ही वह मोटर गाड़ियों को देखकर अति उत्साहित होता था।

एक बार वह अपने पिता जी से उनकी दोपहिया माँग कर चल पड़ा। इच्छा थी कि वह अपने घर से 60 मील दूर होने वाले हवाई जहाज को देखे। हालांकि इस करतब का दर्शक बनने हेतु उसके पास प्रवेश शुल्क भी नहीं था। फिर भी उसने वह करतब देखा। जानते हैं कैसे? एक पेड़ की शाखा पर बैठ कर यहाँ वह क्षण था, जिसने उस नन्हे बालक पर गहरा प्रभाव छोड़ा। मोटर गाड़ियों के प्रति उसकी रुचि को और बढ़ा दिया। कह सकते हैं, यही वह क्षण था जिसने नींव रखीं आज के ज़माने की मशहूर ऑटो कंपनी - 'होंडा' की। उस बालक का नाम था- 'सोइचिरो होंडा'।

सोइचिरो अपनी मशीनी जानकारी और कौशल को और अधिक पैना करना चाहता था। इसीलिए 15 साल की कच्ची उम्र में वह घर छोड़कर टोक्यो चले गया। वहाँ छह साल बतौर मैकेनिक एक मोटर गैराज में काम किया। फिर सन् 1928 में वह अपने प्रांत शिज़ूओका में वापिस आ गया। अपने हुनर एवं अर्जित कौशल के दम पर उसने वहाँ एक ऑटो मरम्मत की कार्यशाला खोली। उसमें सुबह वह ऑटो मरम्मत का काम करता और रात को पिस्टन का रिंग बनाने में जुटा रहता।

उसका इरादा था, अपने इस रिंग के डिज़ाइन को 'टोयोटा' नामक कार-कंपनी की बेचना। इस उद्देश्य को पूरा करने हेतू उसने अपनी पत्नी के जेवर

तक गिरवी रख दिए। लगभग 7 साल के तप के पश्चात् वह कंपनी को देने लायक डिज़ाइन बना पाया। पर शायद उसका संघर्ष खत्म नहीं हुआ था। टोयोटा के इंजीनियरों ने उसकी खूब खिल्ली उड़ाई। उसके डिज़ाइन को एकदम अस्वीकार कर दिया।

पर इस विफलता से वह निराश नहीं हुआ। उसने फिर से नए उत्साह के साथ शुरुआत की और अपनी कमियों को सुधारा। सिर्फ दो सालों बाद वह पुनः नवनिर्मित डिज़ाइन के साथ टोयोटा कंपनी में गया। अब उसकी मेहनत रंग लाई। इंजीनियर उसके डिज़ाइन से अत्यंत प्रसन्न हुऐ और उसे अपनी कंपनी के साथ कान्ट्रेक्ट भी दिलवा दिया।

पर क्या संघर्ष का सिलसिला खत्म हो चुका था?..... नहीं! मुश्किल यह थी

कि टोयोटा को फिस्टन रिंग उपलब्ध कराने हेतू एक फैक्टरी चाहिए थी। लेकिन उन दिनों फैक्टरी के लिए भवन-निर्माण सामग्री की भारी कमी थी। पर यहां भी उसके इरादे पस्त नहीं हुऐ। उसने कंक्रीट को बनाने की नई विधि ही तैयार कर डाली। इससे वह फैक्टरी का निर्माण तो कर ही पाया; साथ ही, साथ ही, अपने कान्ट्रेक्ट के मुताबिक टोयोटा कंपनी को रिंग भी उपलब्ध करा दी। अब इस बात को कई वर्ष बीत चुके थे। लेकिन शायद उसकी प्रगति की राह इतनी सुगम नहीं थी। बात 1944 की है, जब द्वितीय विश्व युद्ध अपने चरम पर था। एक दिन अमरीकी लड़ाकू विमान ने उसकी हमामात्सु में स्थित फैक्टरी को बम से उड़ा डाला। उसी वर्ष उसकी यमशिता में स्थिति दूसरी फैक्टरी भी बमबारी से तबाह हो गई। बर्बादी का यह सिलसिला यहीं नहीं थमा। 13 जनवरी, 1945 को 'नानकाई' भूकंप ने होंडा की एटवा स्थित फैक्टरी को भी तहस-नहस कर दिया।

लेकिन तबाही के इस आलम में भी होंडा के इरादे बुलंद थे। वह परिस्थितियों से निरन्तर लड़ता रहा उसके पास जो कुछ भी बचा था, उसको बेचकर नई शुरुआत की। अगले ही वर्ष उसके सतत पुरुषार्थ का रगं दिखना शुरु हो गया। अक्टूबर माह में उसने अपने 'होंडा' तकनीकी शोध संस्थान का उद्घाटन किया। दो सालों के अथक प्रयासों के बाद एक दोपहिए का निर्माण भी किया। इस दोपहिए की विशेषता थी, उसमें लगा हुआ छोटा-सा इंजन। इस सफलता को सभी ओर से सराहा गया। किंतु अधिक मात्रा में ऐसे उत्पाद बनाने के लिए उसके पास पर्याप्त धन न था।

पर 'हार' शब्द शायद होंडा के शब्दकोश में ही नहीं था। उसको एक युक्ति सूझी। उसने जापान के 18000 दोपहिया दुकान मालिकों को एक प्रेरणास्पद चिट्ठी लिखी। इसमें उसने जापान को विश्व युद्ध के पश्चात् पुनः स्थापित करने हेतू मदद माँगी। उसका दृढ़ विश्वास काम कर गया। 5000 दुकान मालिकों ने आर्थिक रुप से उसको मदद करने के लिए हाथ बढ़ाया। फिर क्या था। होंडा ने मोटर-दोपहियों को अपने देश में तो बेचा ही, समूचे यूरोप और अमरीकी में भी उनकी धूम मच गई। 'सूपर कब' नामक दोपहिए बड़ी संख्या में निर्यात किए गए।

इस तरह होंडा की ज़िन्दगी में मुश्किलें आती रही। पर विजयश्री का ताज हमेशा होंडा के सिर पर सजा रहा। कारण? उस व्यक्ति का अदम्य साहस, ईमानदार प्रयास, विवेकशील निर्णय-प्रणाली और सबसे बढ़कर निरन्तर अपनी गलतियों से सीख कर आगे बढ़ने की आगे बढने की ललक! परिणामस्वरुप आज 'होंडा' कंपनी का नाम विश्व के कोने-कोने में अपनी अलग पहचान बनाए हुए है।

आध्यात्मिक प्रेरणा

'वह पथ ही क्या, जहाँ बाधा न आए।'

सोइचिरो होंडा के जीवन का यह संघर्षमय खंड साधक पथ का प्रतिबिम्ब लगता है। एक ऐसा पथ, जहाँ संघर्ष और साधक अक्सर मिला करते हैं! समय व परिस्थिति के अनुसार यह संघर्ष अपनी रुपरेखा बदलता रहता है। कभी भौतिक, तो कभी मानसिक, तो कभी बौद्धिक समस्याओं का जामा ओढ़कर साधक के सामने आता रहता है। अपने पूरे वेग से साधक की साधकता को हिलाने का जी-तोड़ प्रयास भी करता है। जीव-विज्ञान के अनुसार एक (Caterpillar) तब तक आकाश की उड़ान नहीं भर पाता, जब तक वह स्वयं को तितली में रुपांतरित नहीं कर लेता। इसके लिए उसे 'कायांतरण चक्र' (Metamorphosis Cycle) से गुजरना पड़ता है। विकास प्रक्रिया के दौरान वह कमला कोकून के भीतर अत्यंत कष्ट सहता है। अंततः संघर्ष को पार करता हुआ वह परिणित हो जाता है, एक मनमोहक तितली में।

हे साधकों! यह सत्य है कि संघर्ष कष्टदायी अवश्य लगते है। परन्तु वे हमारी आध्यात्मिक उन्नति के लिए अति आवश्यक होते हैं। आप स्वयं ही सोचिए, अगर कमला जीवन भर उड़ने का ख्वाब ही लेता रहे, कायांतरण चक्र की पीड़ा के भय से स्वयं को तितली में परिणित ही न करे.... तो क्या वह अपनी स्वप्निल इच्छा को पूर्ण का पाएगा? तो फिर हम क्यों अपने पथ पर आए संघर्षो से मुँह मोड़ लेते हैं? क्यों मन की समस्याओं के

सामने अपना जोश व होश खो बैठते हैं? क्यों हम प्रथम प्रयास में ही सफलता की कामना रखते हैं?

उपरोक्त जीवन वृत्तांत में वर्णित है कि लगभग सात वर्ष के अथक पुरुषार्थ के बाद ही होंडा 'टोयोटा कंपनी' को देने लायक 'पिस्टन रिंग' का डिज़ाइन बना पाया। पर तब भी उस कंपनी के इंजीनियरों ने उस डिज़ाइन की खूब खिल्ली उड़ाई एवं उसे नामंजूर कर दिया।पर क्या उस असफलता ने होंडा के हौसलों पर पानी फेर दिया? नहीं, होंडा ने अपनी कमियों से सबक लिया। मंथन किया कि क्या कमी रह गई और फिर से जुट गया उस रिंग के त्रुटिरहित डिजाइन का निर्माण करने में। फिर दो साल के संघर्ष के बाद में सफलता भी प्राप्त हुई। इस तरह 'असफलता' और 'सफलताएँ' धूप छाँव की भाति होंडा के जीवन में झिलमिलाती रही। 'उन्नति की राह संघर्ष की माँग रखती है। फिर चाहे उस पर चलने व्यक्ति का सामना असफलता से कितनी ही दूर क्यों न हो! वह योद्धा अपने आत्म-बल से निर्घात की हर

ठोकर को परास्त कर निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहता है।'

हरिवंश राय बच्चन जी की एक कविता हम सभी साधकों को इसी भाव से प्रेरित करती है।

असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो, क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो। जब तक न सफल हो, अत: हमें निरन्तर बढ़ते जाना है। होंडा की भाँति मार्ग में आए संघर्षो को अवसाद नहीं, अपितु प्रसाद मानकर। क्योंकि संघर्ष एक ऐसा दर्पण है, ऐसा सु-अवसर है, जिससे हम अपनी कमजोरियों का भाँप सकते हैं। फिर उन पर कार्य करने के बाद हम मंजिल को प्राप्त कर सकते हैं!

अमेरिकी नैतिक और सामाजिक दार्शनिक एरिक होफ्फर (Eric Hoffer) भी कहते हैं- 'It still hold true that man is most uniquely human when he turns obstacles into opportunities' कहने पर अभिप्राय कि मानव ही एक ऐसा अद्वितीय जीव है जो अपनी मंजिल में आई हर बाधा, हर संघर्ष अपने अवसर में परिणित करने में सक्षम है।

-प्रस्तुति-मालती पवार

"सारा जग अपना है"

मन में यदि अपनत्व भरा है
तो यह सारा जग अपना है
भेद-भाव का मतभेद न हो
सच विश्वबंधुत्व का सपना हो
पृथ्वी कितना कुछ देती है
और कितना कुछ सहती है

सींचती जलधारा विश्ववृंद को
युग-युग से कलरव बहती है
यदि हम भी थोड़ा सहिष्णु हो जाएं
तो जीवन सुख की सुंदर कल्पना है
पुष्प ने सुरभि को किया कब
अपनी ही परिधि में सीमित

वर्षा की बूंदो ने बिखराए
व्योम पर इंद्रधनुष अगणित
यदि हम भी विस्तृत कर लें
विचारधारा
निश्चित ही जाति-धर्म का अंतर
मिटना है

-मधु जैन

टीसीआईएल कर्मचारी संघ की अवकाश यात्रा-दिल्ली-धर्मशाला, नयना देवी, ज्वाला देवी

'जय माता दी' बोल सच्चे दरवार की जय की उद्घोषणा के साथ प्रबंधन ने इस यात्रा का आभार प्रकट करते हुए, टीसीआईएल कर्मचारी संघ के सनिध्य में उपर्युक्त 'अवकाश यात्रा' का शुभारंभ करते हुए मेसर्स हिमाचल प्रदेश दूरिज़्म डेवलपमेंट कार्पोरेशन के माध्यम से इस यात्रा के लिए दो बसो ने, टीसीआईएल प्रांगण से रात्रि 8 बजे दिनांक 22 जनवरी, 2016 को 60 सदस्यों को परिवारों सहित लेकर प्रस्थान किया।

इस टूर का आयोजन निम्नलिखित कर्मचारियों ने किया:

श्री अनूप कूमार	:	टूर आयोजक
श्री उमेश चन्द्र	:	टूर आयोजक
श्री जे. पी. यादव	:	टूर आयोजक
श्री अमृत लाल	:	टूर आयोजक
श्री सोवरन सिंह	:	टूर आयोजक

इस अविस्मरणिय रमणीक, धार्मिक व मनमोहक यात्रा के दौरान सभी सदस्यों ने निम्न यात्रा के वर्णित उल्लेखनीय बिंदुओं की अनुभूति की:

प्रथम दिवस : धर्मशाला में दो दिन के होटल प्रवास के शुभारंभ के साथ सदस्यों ने भाखडू नाग मंदिर, मकलोडी गंज में रमणीत पर्वतों, प्राकृतिक श्रृंखलाओं, देवहार के सुंदर बनों, प्राकृतिक वादियों, सन प्वाइंट, प्राचीन चर्च, दलाई लामा के विख्यात मंदिर के साथ अति सुंदर झीलो दृश्यों का आनंद उठाया।

द्वितीय दिवस : द्वितीय दिवस पर प्राचीन वैद्यनाथ मंदिर, मां चामुण्डा देवी एवं कल-कल करती वाण गंगा के किनारों पर बच्चों ने भगवान शंकर के पत्थरों के बीच फोटोग्राफी की एवं चिड़ियाघर का आनंद लेकर अति प्रसन्न हुए।

तृतीय दिवस : तृतीय दिवस पर मां नगरकोट देवी दर्शन, मां ज्वाला देवी दर्शन, गंगा एवं मां चिन्तपूर्णी देवी के दर्शन कर भाव विभोर हो गए एवं गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर सभी सदस्यों एवं बच्चों ने डी जे की व्यवस्था कर मंनोरजक डांस किया।

चतुर्थ दिवस : चतुर्थ दिवस यात्रा के अंतिम पड़ाव पर मां नयना देवी के अति दुर्गम, गहरी खाइयों वाले ऊचें पर्वतों, घने जंगलो के बीच से यात्रा का मनोहर आनंद लेते हुए, मां नयना देवी की उच्च पहाड़ी पर स्थित मंदिर का ट्रॉली द्वारा जाकर दर्शन कर धन्य हुए। मां का आर्शीवाद प्राप्त किया। मानसा देवी पंचकुला के अति सुंदर मंदिर, में के दर्शन कर अत्यंत सुख की अनुभूति हुई। इस अत्यंत धार्मिक, मनोरजक, रमणीक व मनमोहक यात्रा की समाप्ति जो टीसीआई एल भवन के प्रांगण मे हुई। कर्मचारी संघ के आयोजकों व संचालकों ने यात्रा में सम्मलित सदस्यों, व अनेक परिवार सभी का धन्यवाद व आभार प्रकट किया।

चौथे दिन की इस यात्रा में माँ नयना देवी का मंदिर अंतिम पड़ाव था। यह मंदिर अति दुर्गम, ऊँची पहाड़ियों गहरी खाईयों व घने जंगल के बीच एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है और यहां तक पहुँचने के लिए ट्रॉली द्वारा जाया है और ट्रॉली द्वारा इस मनमोहक यात्रा का आनंद सभी ने उठाया वे माँ के दर्शन कर अत्यंत सुख का अनुभव किया। अंत में इस यात्रा भी समाप्ति टीसीआईएल भवन के प्रांगण में करते हुए कर्मचारी संघ के आयोजकों व संचालकों ने सभी कर्मियों के पारिवारिक सदस्यों व बच्चों के प्रति आभार प्रकट किया।

-टीसीआईएल कर्मचारी संघ

श्री वखलू का टीसीआईएल परिवार के लिए शुभकामना संदेश

टीसीआईएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री विमल वखलू दिनांक ने 31-01-2016 को अपनी सेवाओं से निवृत्ति प्राप्त की। इसी दिवस पर उनके साथ श्री सुखपाल शर्मा, कार्यपालक निदेशक, श्री पी. के. मंडल, कार्यपालक निदेशक, श्री गौतम प्रसाद महत्तो, वरि. पर्यवेक्षक और श्रीमती अनिता शर्मा, टेलीफोन ऑपरेटर भी सेवानिवृत्त हुए। उन्हें भावभीनी विदाई देने के लिये टीसीआईएल के प्रांगण में विदाई समारोह का आयोजन किया गया टीसीआईएल परिवार श्री वखलू और सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के सुखद, स्वस्थ एवं मंगलकारी की कामना करता है।

प्रिय मित्रों,

टीसीआईएल में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए मुझे आप सभी से जो स्नेह और प्रोत्साहन मिला है, उसके लिए मैं आप सभी का हृदय से आभारी हूं।

मुझे टीसीआईएल को लगभग एक दशक तक अपनी सेवाएं देने का गौरव प्राप्त हुआ, और निश्चित रुप से यह अवधि मेरे 39 वर्षों के सेवा-सोपान का सबसे महत्वपूर्ण चरण था। मेरी यह लम्बी यात्रा टीसीआईएल में प्राप्त अनुभव के बिना कभी पूरी नहीं हो पाती। यह बात मैं इसलिए भी कह रहा हूं कि मुझे पैन-अफ्रीका जैसी प्रतिष्ठित परियोजना में कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जोकि मेरे जीवन की सबसे जटिलतम, विविधताप्राप्त किन्तु महत्वपूर्ण परियोजना रही है।

और फिर 31 जनवरी 2016 का वो दिन आ गया जब मुझे आप सभी से कार्यलयी तौर पर विदा होना पड़ा। टीसीआईएल परिवार के साथ मैंने जो समय व्यतीत किया है, उसकी यादें मेरी जीवन रुपी पुस्तक के पन्नों में सदैव अंकित रहेंगी, कभी मिट नहीं सकती। टीसीआईएल में मेरी सेवानिवृत्ति वाले दिन आप लोगों ने व्यक्तिगत रुप से जो स्नेह व आभार प्रकट किया, और सामूहिक रुप से जिस स्नेह व सम्मान के साथ मुझे विदा किया, इसके लिए आपका धन्यवाद करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।

प्रभु इच्छा से भविष्य मे भी आप लोगों से मिलने के अवसर मिलते रहेंगे। ईश्वर से कामना करता हूं कि आप सभी सपरिवार प्रसन्न रहें, स्वस्थ रहें व नित नई सफलाएं प्राप्त करते रहें।

सस्नेह,

-विमल वखलू

सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित स्थायी समिति का टीसीआईएल दौरा

सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित संसद की स्थायी समिति ने दिनांक 13 फरवरी, 2016 को चेन्नई में टीसीआईएल अधिकारियों के साथ बैठक की। उल्लेखनीय है कि लोकसभा सांसद श्री अनुराग ठाकुर इस समिति के अध्यक्ष हैं। वे हिमाचल प्रदेश से भाजपा सांसद है। इस बैठक में समिति की ओर से 12 सांसदों ने भाग लिया जबकि टीसीआईएल प्रबंधन की ओर से श्री अजय कुमार गुप्ता, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री राजेश कपूर, निदेशक (तकनीकी), श्री राजीव गुप्ता, निदेशक (परियोजनाएं), श्री अजय कुमार अग्रवाल, कार्यपालक निदेशक (सिविल), श्री वी.एस. परमेश्वरन, कार्यपालक निदेशक (दक्षिणी क्षेत्र) व अन्य प्रमुख अधिकारियों ने भाग लिया।

टीसीआईएल के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री विमल वखलू माननीय संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद को 31.3 मिलियन रु. का लाभांश का चैक सुपुर्द करते हुए। चित्र में उनके साथ दूरसंचार विभाग के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित हैं।

टीसीआई एल के श्री अशोक कुमार ने नराकास स्तर पर आयोजित आशु भाषण प्रतियोगिता में पहला स्थान प्राप्त किया। नराकास के सचिव श्री हीरा वल्लभ शर्मा के साथ श्री अशोक कुमार।

श्री अशोक कुमार के अलावा टीसीआई एल के श्री शशांत देशमुख ने भी नराकास स्तर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। दोनो कर्मचारी अध्यक्ष महोदय श्री अजय गुप्ता व निदेशक महोदय श्री राजीव गुप्ता के साथ।

टीसीआईएल को दिनांक 4 अप्रैल 2016 को नई दिल्ली में दैनिक भास्कर के प्रतिष्ठित 'भारत गौरव पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। टीसीआईएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अजय गुप्ता माननीय शहरी विकास मंत्री श्री वैंकया नायडु के कर कमलों से यह सम्मान ग्रहण करते हुए। नई दिल्ली के ताज होटल में आयोजित इस भव्य समारोह में माननीय संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री रवि शंकर प्रसाद भी उपस्थित थे।